'सर्वेश्वरदयाल सक्सेना के 'बकरी' नाटक की प्रासंगिकता'

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग,

नई दिल्ली

पुरस्कृत

लघु शोध प्रकल्प

(Minor Research Project)

प्रस्तोता

प्रा. नितिन हिंदूराव कुंभार

एम.ए.सेट

सहायक प्राध्यापक

हिंदी विभाग

आर्टस्, सायन्स ॲण्ड कॉमर्स कॉलेज, रामानंदनगर(बुर्ली)

तहसील–पलुस, जिला–सांगली

सलग्न –शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर (महाराष्ट्र)

जनवरी, 2013

Created with nitroPDF professional
download the free trial online at nitropdf.com/professional

अपनी बात .....

'काव्येषु नाटकं रम्यं नाटकान्त काव्यत्वम्' अर्थात नाटक काव्यकला का सर्वश्रेष्ठ अंग है। भारतीय साहित्य में नाटय साहित्य विधा अति प्राचीन है। वैदिक काल से ही नाटय साहित्य का उल्लेख मिलता है। नाटक दृश्य काव्य होने के कारण सबसे लोकप्रिय और प्रभावी विधा है, जो दर्शकों से सीधा संवाद साधती है।

स्वातंत्र्योत्तर युग में नाटय विधा को लोकप्रियता प्रदान करनेवाले नाटककारों में सर्वेश्वरदयाल सक्सेना जी का नाम सर्वोपरि है। सर्वेश्वर जनमानस के साहित्यकार है। नाटककार, कथाकार और कवि के रूप में उनका योगदान उल्लेखनीय है। उनके वैचारिक पक्ष उनके साहित्य में परिलक्षित होते हैं। जीवन के प्रति गहरी सम्पृक्ति तथा शोषण और दमन के विरूद्ध क्रांति की ज्वाला उनके वैचारिक पक्ष के महत अंग हैं। अतः सर्वेश्वर समझौता के नहीं विद्रोही साहित्यकार है। यह विद्रोही वृत्ति उनके 'बकरी' नाटक में भी परिलक्षित होती है।

'बकरी' उनका प्रथम प्रकाशित (सन 1974) नाटक है। 'बकरी' सार्थक और समकालीन परिस्थिति का नाटक है। जो राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, प्रशासनिक और आर्थिक परिस्थितियों पर व्यंग्य करता है, तो दूसरी ओर अन्याय–अत्याचार को निरंतर झेलती देश की ग्रामीण, अशिक्षित जनता का असंतोष और विद्रोह को भी अभिव्यक्त करता है। स्वातंत्र्योत्तर युग में गांधीजी के सिद्धांतों का दूरपयोग कर अपने ही नेता देश की गरीब–साधारण जनता को लूटते हुए दिखाई देते हैं। अतः नाटक का यह प्रतिपाद्य बिल्कुल प्रासंगिक है। इस प्रासंगिकता को उद्घाटित करना इस लघु शोध प्रकल्प का उद्देश्य है।

'सर्वेश्वरदयाल सक्सेना के 'बकरी' नाटक की प्रासंगिकता' इस लघु शोध प्रकल्प को पॉच अध्यायों में विभाजित किया हैं।

प्रथम अध्याय में हिंदी नाटक विधा का क्रमिक उद्भव और विकास दिखाकर यह स्पष्ट किया है कि यह विधा निरंतर प्रगति की सीढ़ियॉ चढ़कर विकास की और अग्रसर है।

द्वितीय अध्याय में प्रयोगधर्मी नाटककार सर्वेश्वरदयाल सक्सेना का व्यक्तित्व, उनकी स्वभावगत विशेषताएँ तथा कृतित्व का परिचय दिया है। जो सुधी पाठकों को निश्चित रूप से प्रेरणादायक साबित होगा।

Created with nitroPDF professional
download the free trial online at nitropdf.com/professional

तृतीय अध्याय में नाटक के तत्वों की दृष्टि से 'बकरी' नाटक की समीक्षा की गयी है। जो सर्वेश्वर की नाटक विधा की गहराई को स्पष्ट करती है।

चतुर्थ अध्याय में 'बकरी' नाटक की राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, प्रशासनिक और आर्थिक प्रासंगिकता को प्रस्तुत किया है।

पंचम अध्याय में उपसंहार के द्वारा 'बकरी' नाटक की मौलिकता को दर्शाया गया है।

अंत में संदर्भ सूची दी है जिसके ही कारण यह लघु शोध प्रकल्प को मैं पूर्णविराम दे सका।

लघु शोध प्रकल्प के संदर्भ में सबसे पहले मैं विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने मेरे इस प्रकल्प को मंजूरी दी। अनुसंधानात्मक दृष्टिकोण विकसित करने के लिए मुझे प्रेरणा और मार्गदर्शन जिनसे मिला वे मेरे विभागाध्यक्ष प्रा.पी.एन.आवटे जी के प्रति भी मैं इस सुअवसर पर कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ। समय समय पर लघु शोध की पूर्ति के लिए सहयोग और उचित परामर्श देनेवाले मेरे सहकर्मी प्रा.डॉ.डी.जी.गाताडे, प्रा.कैलास महाले, प्रा.सतिश सायकर, ग्रंथपाल अमोल खोब्रागडे तथा महाविद्यालय के आदरणीय प्राचार्य डॉ. सुनिल कांबळे जी इनके प्रति भी मैं सदैव आभारी रहूँगा।

इस शुभ अवसर पर मेरे स्वर्गीय पिताजी और दीदी के प्रति सबसे बड़ी कृ तज्ञता मेरे लिए मात्र उनकी स्मृति ही है।

जिनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित किए बिना मैं अपनी बात समेट ही नहीं सकता वे मेरे परिवार के सदस्य पूजनीय माताजी, बडे भैय्या प्रा.पोपट कुंभार, भाभी, मेरी चिरसंगीनी प्रियांका और घर की रौनक शंतनु, अनुजा, श्वेतांका, शार्दूल इन सभी ने मुझे प्रकल्प पूर्ति के लिए समय और सहयोग दिया। अतः उनके ऋण में रहना ही मेरे लिए संतोष की अनुभूति है।

इस लघु शोध प्रकल्प का मुद्रणकार्य सुयश कम्प्यूटर, रामानंदनगर की संचालिका श्रीमती एम.जी.वडडीकर ने समय पर पूरा कर सहयोग दिया, अतः उनके प्रति भी मैं आभार व्यक्त करता हूँ। विशाल हिंदी साहित्य सागर में मेरे इस छोटे से प्रयास का सुधीजन समादार करेंगे इसी विश्वास के साथ .....

प्रा.नितिन कुंभार

Created with nitroPDF professional
download the free trial online at nitropdf.com/professional

अनुक्रम

1) हिंदी नाटक : उद्‌भव और विकास 05

2) सर्वेश्वरदयाल सक्सेना का व्यक्तित्व और कृतित्व 09

3) 'बकरी' नाटक की समीक्षा 17

4) 'बकरी' नाटक की प्रासंगिकता एवं व्यंग्यात्मकता 24

5) उपसंहार 43

6) संदर्भ सूची 45

`

Created with nitroPDF professional
download the free trial online at nitropdf.com/professional

प्रथम अध्याय

हिंदी नाटक : उद्‌भव और विकास

वास्तविक रुप में रंगमंच और अभिनय की दृष्टि से सफल नाटक आधुनिक काल से पहले नहीं लिखें गए। आधुनिक काल में भी द्‌विवेदी युगीन नाटक के बाद ही नाटक में विशिष्टता के दर्शन होते हैं।

● हिंदी का प्रथम नाटक :–

इस संदर्भ में विभिन्न विद्‌वानों में पर्याप्त मतभेद हैं। भारतेंदु हरिश्चंद्र जी ने गोपालचंद्र गिरिधर दास के 'नहुष' नाटक को हिंदी का प्रथम मौलिक नाटक माना है।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल जी ने और बाबू गुलाबराय ने महाराज विश्वनाथ सिंह कृत 'आनंद रघुनंदन' को हिंदी का प्रथम मौलिक नाटक माना है।

डॉ. शिवदानसिंह चौहान ने भारतेंदु हरिश्चंद्र जी की 'वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति' रचना को हिंदी का प्रथम मौलिक नाटक माना है।

निष्कर्षतः आधुनिक काल के विद्‌वान महाराज विश्वनाथ सिंह कृत 'आनंद रघुनंदन' को ही हिंदी का प्रथम सफल मौलिक नाटक मानते हैं।

नाटक के उद्‌भव और विकास को अध्ययन की सुविधा के लिए हम निम्न भागों में विभाजित करते हैं –

1) भारतेंदु युगीन नाटक।

2) द्‌विवेदी युगीन नाटक।

3) प्रसाद युगीन नाटक।

4) प्रसादोत्तर युगीन नाटक।

1) भारतेंदु युगीन नाटक :–

भारतेंदु युग में मूलतः दो प्रकार के नाटक लिखें गए। एक जनप्रियता के आधार पर, जैसे–इंदर सभा, बंदर सभा, गुलबकावली आदि। दूसरी ओर अंग्रेजी साहित्य के संपर्क से संस्कृत, मराठी, बंगला, अंग्रेजी आदि के अनुवाद से हिंदी में साहित्यिक नाटक की रचना हुई। साहित्यिक आधार पर इस काल में साहित्यिक नाटक, रंगमंचीय नाटक, प्रहसन नाटक, अनुवादित नाटक आदि प्रकार के नाटक लिखें गए। इस काल के नाटकों में भारतेंदु हरिश्चंद्र जी के–वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति चंद्रावली, भारत दुर्दशा, नीलदेवी, अंधेरी नगरी, प्रेम जोगिनी अ

Created with nitroPDF professional
download the free trial online at nitropdf.com/professional

के–चंद्रसेन, शिशुपाल वध, नल दमयंती, शिक्षा दान। राधाकृष्ण दास का–महाराना प्रताप। प्रतापनारायण मिश्र के–गो संकट। बदरीनाथ चौधरी–भारत सौभाग्य। आदि उल्लेखनीय नाटक है।

निष्कर्षतः भारतेंदु युगीन नाटक रीति कवियों और फारसी नाटकों से प्रभावित थें। जिससे अनेक नाटकों में चमत्कार पूर्ण घटना कार्य, विभिन्नता, उद्देश्य रहित दृश्य योजना आदि का आधिक्य रहा। इतना होते हुए भी इस काल के नाटक समाज सुधार, राष्ट्रप्रेम, देशहित आदि की दृष्टि से उच्च एवं परिपूर्ण है।

2) द्विवेदी युगीन नाटक :–

द्विवेदी युग में नाटकों को उर्दु और फारसी बच्चों के सिवाय हिंदी रंगमंच के लिए लिखने का प्रयास किया गया। इस युग के नाटक मंच निर्माण और अभिनय का दृष्टि से विशिष्ट है। नाटकों का अधिकांश आधार इतिहास है। द्विवेदी युग के नाटकों को पौराणिक नाटक, ऐतिहासिक नाटक, सामाजिक नाटक, रोमांचकारी नाटक, प्रहसन नाटक, अनुवादित नाटक आदि वर्गों में विभाजित किया जा सकता है। पौराणिक नाटकों में चरित्रों के माध्यम से जनता को उपदेश देने का स्वर प्रधान है। इस समय के नाटकों का मुख्य उद्देश्य समाज सुधार था। इस युग में हास्य की दृष्टि से भी कुछ नाटक लिखें गए।

इस काल के नाटकों में पंडित प्रतापनारायण मिश्र के–कलि प्रभाव, जुआरी खुआरी, हठी हम्मीर। राधाकृष्ण दास के–दुःखिनी बाला, महारानी पद्मावती, महाराना प्रतापसिंह। राधाचरण गोस्वामी के–सती चंद्रावती, अमरसिंह राठौर, श्रीदामा, बूढ़े मुहँ मुहासे, भंग तरंग। ज्वालाप्रसाद मिश्र–सीता वनवास। बदरीनारायण 'प्रेमधन' का–प्रयाग रामागमन आदि उल्लेखनीय नाटक हैं।

3) जयशंकर प्रसाद युगीन नाटक :–

प्रसाद जी ने सर्वप्रथम हिंदी नाटकों को हलके फूलके हास्यव्यंग्य, अस्तव्यस्त कथावस्तु, असंगत कथोपकथन तथा अव्यवहारिक चरित्र चित्रण आदि की शृंखला से मुक्तकर उन्हें शुद्ध ऐतिहासिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक, एवं विशिष्ट चिंतनधारा के अनुकूल बनाया। वास्तव में हिंदी नाटय साहित्य के प्रसाद जी ही युग प्रवर्तक थें। भारतेंदु जी ने संस्कृत की अनुपयोगी रूढ़ियों को त्यागकर पश्चिम शैली को अपनाने का प्रयास किया था। प्रसाद ने कथ्यात्मक स्तर पर दोनों का समन्वय किया।

Created with nitroPDF professional
download the free trial online at nitropdf.com/professional

प्रसाद ने भारतेंदु द्वारा स्थापित नाटक और रंगमंच परंपरा को नया जीवन और नई दिशा प्रदान की। इस युग में ऐतिहासिक और सामाजिक नाटक प्रमुख रहें।

प्रसाद के कुछ उल्लेखनीय नाटक इस प्रकार है–सज्जन, एक घूँट, करुणालय, अजातशत्रु, स्कन्दगुप्त, चंद्रगुप्त, ध्रवस्वामिनी आदि।

प्रसाद के अतिरिक्त हरिकृष्ण प्रेमी जिन्होंने मुगलकाल के ऐतिहासिक कथानकों पर नाटक लिखें और हिंदू मुसलमानों के बीच प्रेम भाव बढ़ाने पर बल दिया। उनके प्रमुख नाटक इस प्रकार हैं–रक्षाबंधन, आहुति, स्वप्नभंग, प्रतिशोध, शिव साधना आदि।

गोविंदवल्लभ पंत ने इतिहास, पुराण और समाज से कथा चुनकर–वरमाला, राजमुकुट, कंजूस की खोपड़ी, अंगूर की बेटी, सिंदूर बिन्दी, ययाति, विषकन्या आदि नाटक लिखें। उसी प्रकार उदयशंकर भटट–विक्रमादित्य, मत्स्यगंधा, विश्वामित्र, मुक्तिपथ आदि। लक्ष्मीनारायण मिश्र–सन्यासी, मुक्ति का रहस्य। विश्वंभरनाथ शर्मा अत्याचार का परिणाम, हिंदू विवाह। आदि उल्लेखनीय नाटक और नाटककार है।

4) प्रसादोत्तर युगीन नाटक :–

इस युग में वास्तव में हिंदी नाटक रंगमंच और यथार्थ नाटक से जूड़ गया।इस युग के नाटकों को सुविधा के लिए निम्न वर्गों में विभक्त कर सकते है –

अ) साहित्यिक मंचीय नाटक :–

हिंदी नाटकों को प्रसाद युगीन रोमान्स के कटघरे से बाहर निकालकर उसे आधुनिक भावबोध के साथ जोड़नेवाले प्रथम नाटककार है–उपेंद्रनाथ अश्क। प्रसादोत्तर काल के ये सर्वाधिक सफल नाटककार है। उनके नाटक इस प्रकार है–जय पराजय, स्वर्ग की झलक, कैद और उड़ान, अंजो दीदी। अंजो दीदी उनकी सर्वाधिक प्रौढ़ एवं सफल रचना है।

सार्थक नई जटिल जीवन अनुभूतियों को नाटकीयता प्रदान करनेवालों में जगदीशचंद्र माथुर अग्रगण्य है।इनकी कृतियॉ–कोणार्क, शारदीया, पहला राजा आदि प्रसिद्ध है।

अभिनव नाटकीय प्रयोगों और तकनीकी तंत्रों के क्षेत्रों में डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल विशिष्ट है।उनकी कृतियॉ–अंधा कुआँ, मादा कॅक्टस, तीन ऑखोंवाली मछली, सुंदर रस, रक्तकमल, रातरानी, आदि प्रमुख है।

Created with nitroPDF professional
download the free trial online at nitropdf.com/professional

मानवीय शोकांतिका को रचनात्मक ढ़ग से प्रस्तुत करनेवाले मोहन राकेश सिद्ध हस्त नाटककार है। उनकी प्रसिद्ध कृतियॉ हैं–लहरों का राजहंस, आधे आधूरे, आषाढ़ का एक दिन आदि।

ब) गीति नाटक :–

आधुनिक भावबोध को रुपायित करनेवाले नाटकों में धर्मवीर भारती के 'अंधा युग' इस गीति नाटय का विशेष स्थान है। यह नाटक एक विशेष त्रासदी है। धर्मवीर भारती जी के अतिरिक्त अन्य गीति नाटय सुमित्रानंदन पंत के–रजत शिखर, शिल्पी। गिरिजाकुमार माथुर का–कल्पांतर, दुष्यंत कुमार, एक कंठ विषपायी उल्लेखनीय है।

क) सामाजिक नाटक :–

सामाजिक नाटकों में समाज की विभिन्न समस्याओं का, रुढ़ि परंपराओं का चित्रण यथार्थ रुप से किया गया। कुछ नाटकों में आदर्शवाद का पुट भी मिलता है। सेठ गोविंददास के–हिंसा और अहिंसा। हरिकृष्ण प्रेमी का–बंधन और छाया। चंद्रगुप्त विदयालंकार का–न्याय की एक रात। विनोद रस्तोदी का–आज़ादी के बाद। नरेश मेहता का–सुबह के घंटे आदि उल्लेखनीय सामाजिक नाटक है।

कुछ नाटककारों ने इस काल में भी पुराण और इतिहास के आधार पर नाटकों की रचना की है।

इस प्रकार समग्र रुप से देखने पर आज हिंदी नाटक परंपरा और प्रयोग की सीढ़ियों पर चढ़ता हुआ निरंतर विकास की ओर अग्रसर हो रहा है, और अधिक नई उॅचाई पाने की कोशिश में है।

Created with nitroPDF professional
download the free trial online at nitropdf.com/professional

द्वितीय अध्याय

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना का व्यक्तित्व

साहित्य का महत उददेश्य मात्र मनोरंजन ही नहीं मानव की चित्त वृत्तियों में सुधार लाना भी है। इसलिए मानव, मानव को केंद्र मानकर मानवता की स्थापना करने का प्रयास करता है। जीवन के यथार्थ को शब्दों के माध्यम से अभिव्यक्त करने की मध्यकालीन कवियों की परंपरा को आधुनिक युग के कवियों ने पोषित किया। इसी परंपरा के पोषक प्रतिनिधि कवियों में सर्वेश्वरदयाल सक्सेना का नाम सर्वोपरि लिया जाता है।

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना सर्वहारा वर्ग के प्रतिनिधि कवि है। आम लोगों के प्रति उनके मन में अपार सहानुभूति और संवेदना है। इसलिए उन्होंने पूरी इमानदारी के साथ यथार्थ को प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। नई कविता तथा तीसरे सप्तक के ख्यात नाम कवि के रुप में वे सर्व परिचित है।सर्वेश्वर बहुमुखी प्रतिभा के धनी होने के कारण साहित्य की सभी विधाओं पर उन्होंने लेखनी चलाई है। अतः सर्वेश्वर एक सजग कलाकार के साथ साथ एक सिद्धहस्त पत्रकार, विचारक, अनुवादक, मुख्य तथा उपसंपादक, सहायक प्रोडयूसर, समाज सुधारक के रुप में ज्ञात है। ऐसे अद्वितीय प्रतिभा संपन्न तथा बहुआयामी साहित्यकार के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालना अनिवार्य है।

- **जन्म :–**

श्री विश्वेश्वरदयाल सिंह सक्सेना तथा श्रीमती सौभाग्यवती सक्सेना के घर बृहस्पति के दिन 15 सितम्बर, 1927 को बस्ती जिले के पिकौरा नामक गॉव में सर्वहारा वर्ग को वाणी देनेवाले सर्वेश्वरदयाल सक्सेना का जन्म हुआ। इनका परिवार शिक्षा संपन्न एवं संस्कारयुक्त था। सर्वेश्वर के पारिवारिक संस्कार तथा जन्मभूमि के देहाती परिवेश ही उनकी प्रतिभा के विकास में पर्याप्त सहायक हुए।इसलिए वे कभी महानगरीय सभ्यता से समझौता नहीं कर पाए।

- **बाल्यकाल :–**

सर्वेश्वर का बाल्यकाल पिकौरा गॉव के कस्बे में बीता। सर्वेश्वर के पास सूक्ष्म निरीक्षण शक्ति और कुशाग्र बुद्धि होने के कारण वे जीवन के यथार्थ को ठीक से पढ़ सके। घर के पास अनाथाश्रम में रहनेवाले बच्चों की

Created with nitro PDF professional
download the free trial online at nitropdf.com/professional

पारिवारिक कलह और आर्थिक संघर्ष आदि के कारण बचपन से ही उनकी दृष्टि मानवतावादी हो गयी।

सर्वेश्वर के माता पिता दोनों ही अध्यापक थें। परंतु हमेशा आर्थिक संकटों से जूझते थें। पिताजी स्वयं काव्य प्रिय थे और कविता करना भी उनका शौक था। परंतु बेटे सर्वेश्वर को वे काव्य लेखन से दूर रखना चाहते थे। क्योंकि उनका मत था कि कवि भौतिक साधनों में असफल हो जाता है और साथ में पढ़ाई लिखाई से दुर। परंतु सर्वेश्वर पिताजी के ही काव्य मार्ग को अपनाकर कवि रुप में ख्यात हुए।

● **पारिवारिक स्थिति :–**

सर्वेश्वर के माता पिताजी दोनों भी अध्यापक थें परंतु उनके परिवार की आर्थिक स्थिति शोचनीय ही थी। परिवार आर्य समाजी होने के कारण धार्मिक कर्मकांडों पर उनका विश्वास नहीं था। अंधःविश्वास, जाति पांति, राजनीति आदि का वे सक्त विरोध करते थे। राममनोहर लोहिया तथा समाजवादी विचारों से प्रभावित होने के कारण उनकी दृष्टि मानवतावादी बनी थी।

सर्वेश्वर के पिताजी कड़े अनुशासक, कठोर, सिद्धांतवादी थे। अपने पुत्र को उॅचे दर्जे तक पहुॅचाना चाहते थे परंतु बचपन से ही सर्वेश्वर को साहित्य में ही रुचि थी। सर्वेश्वर की मॉ ने उन्हें विशेष दुलार से उन्नति के पथ पर अग्रसर किया था। मॉ की प्रेरणा और आशीर्वाद हमेशा उनके साथ था।

मॉ पिताजी की मृत्यु के बाद परिवार की पूरी जिम्मेदारी सर्वेश्वर पर आ पड़ी जिसके कारण उनके हालात और भी बिगड़ गए। परंतु सर्वेश्वर बचपन से ही परिश्रमी होने के कारण अपनी जरुरतों का प्रबंध करने के साथ साथ दूसरों को भी मदद करते थे।

सर्वेश्वर की पत्नी का नाम विमला था जिससे वे सर्वाधिक प्रेम करते थे। सर्वेश्वर की जिंदगी मस्ती भरी थी।जिसका परिचय उनके काव्य से आता है।

पत्नी की मृत्यु के उपरान्त सर्वेश्वर के जीवन में सूनापन आ गया। पत्नी की विरह वेदना को उन्होंने बड़ी बेबसी के साथ प्रस्तुत किया है।

पत्नी की मृत्यु के बाद अपनी दोनों बेटियों शुभा और विभा के पालन पोषण की जिम्मेदारी को उन्होंने बड़ी बखूबी के साथ निभाया।

Created with nitroPDF professional
download the free trial online at nitropdf.com/professional

● **शिक्षा :–**

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना जी की अपनी आरंभिक शिक्षा बस्ती के ऐग्लों संस्कृत हाईस्कूल में हुई। सन 1944 ई में क्वींस कॉलेज बनारस में इंटरमीडिएट की परीक्षा दी। इसी साल उनकी पहली रचना 'माधुरी' में प्रकाशित हुई। इंटर पास होने तक के एक अच्छे कहानीकार तथा कवि के रुप में प्रसिद्ध हो चुके थे। इंटर पास होने के बाद उन्होंने प्रयाग विश्वविद्यालय से सन 1946 ई और सन 1949 ई में क्रमशः बी.ए और एम.ए की उपाधि प्राप्त की। प्रयाग का साहित्यिक वातावरण और अपने अध्यापकों से वे काफी प्रभावित थे। इसलिए वे प्रयाग में ही रहना चाहते थे।

● **कार्यक्षेत्र :–**

सर्वेश्वर एक सजग कलाकार, पत्रकार, विचारक, अनुवादक, मुख्य तथा उपसंपादक, सहायक प्रोडयूसर, सामाजिक कार्यकर्ता के रुप में परिचित होने के कारण उनका कार्यक्षेत्र बड़ा व्यापक था।

प्रयाग विश्वविद्यालय से एम.ए. की उपाधि प्राप्त करने के बाद उन्होंने ए.जी. ऑफिस में यू.डी.सी के पद पर कार्य किया। सन 1955 ई में आकाशवाणी दिल्ली के समाचार विभाग में हिंदी अनुवादक के रुप में उनकी नियुक्ति हुई। सन 1960 ई में आकाशवाणी लखनऊ में सहायक प्रोडयूसर के पद पर कार्यरत हुए। सन 1964 ई में आकाशवाणी की नौकरी से त्यागपत्र देकर वे 'दिनमान' के उपसंपादक के पद पर नियुक्त हुए और सन 1967 ई में उन्हें 'दिनमान' के मुख्य संपादक के रुप में बढ़ौती मिली।

सन 1982 ई के अक्तुबर में उन्होंने 'पराग' बालपत्रिका का संपादन कार्य संभाला। इतनी व्यस्तता के बावजूद भी वे साहित्य सृजन में लगे रहें। उनकी रचनाएं 'आर्यमित्र' (सन1941) और 'प्रतीक' (सन1951) में प्रकाशित हुई। अतः सर्वेश्वर एक सजग कवि के साथ साथ एक कहानीकार, उपन्यासकार, नाटककार, आदि गद्य लेखक के रुप में परिचित हुए। सर्वेश्वर की प्रतिभा को पहचानकर अज्ञेय जी ने उन्हें कवि के रुप में खड़ा होने की प्रेरणा और आशीर्वाद देकर 'तीसरे सप्तक' के कवियों में स्थान दिया।तब से सर्वेश्वर 'नई कविता' के प्रतिनिधि कवि बने।

● **पुरस्कारः–**

सर्वेश्वर साहित्यकार, पत्रकार, एवं संपादक के रुप में का
माध्यम से उन्होंने सर्वहारा वर्ग को वाणी देकर मानवतावाद क

Created with nitroPDF professional
download the free trial online at nitropdf.com/professional

प्रयास किया। सर्वेश्वर मूलतः विद्रोही और स्पष्टवादी होने के कारण ख्याति से दूर ही थे। फिर भी उनकी रचना 'खूँटियों पर टंगे लोग'(काव्यसंग्रह) को साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

● **मृत्युः–**

शुक्रवार, 23 सितम्बर, 1983 ई की रात्रि में 1 बजे दिल का दौरा पड़ने के कारण सर्वेश्वर जी का निधन हुआ। जिसके कारण हिंदी साहित्य जगत को एक सजग कलाकार के अभाव की क्षति पहुँची।

अ) सर्वेश्वर की स्वभावगत विशेषताएँ :–

सर्वेश्वर बचपन से ही ग्रामीण परिवेश से जुड़े रहने के कारण उनका रहन सहन सरल सीदा साधा था। वे भौतिक आकर्षणों से दूर रहते थे। हमेशा हँस मुख होने के कारण उनके आसपास का परिवेश खिला रहता था। उनके आकर्षक व्यक्तिमत्व के साथ साथ उनके स्वभाव की निम्न विशेषताएँ निखर उठती हैः–

1) विद्रोही व्यक्तित्व :–

सर्वेश्वर विद्रोही व्यक्तित्व के साहित्यकार थे। विद्रोही व्यक्तित्व के बीज बाल्यकाल से ही बोए गए थे। वर्तमान व्यवस्था देखकर ही वे विद्रोही बनते चले गए। इसलिए जीवनभर वे परिस्थिति से समझौता नहीं कर पाए। उनका यह विद्रोही स्वभाव उनकी रचनाओं में भी परिलक्षित होता है। विशेषतः उनके मन में राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक विसंगतियों के प्रति घृणा थी। अतः वे इन सभी व्यवस्था पर व्यंग्य के माध्यम से करारी चोट करते हुए नई दिशा की तलाश करते है। मोहभंग की कटु यथार्थ को झेलते हुए उन्होंने विकृत सभ्यता का मुखौटा उतारने का प्रयास किया। 'लड़ाई' कहानी में उनके विद्रोही व्यक्तित्व के दर्शन होते है। आक्रोश और विद्रोह उनके साहित्य की शक्ति और सृजन प्रेरणा है।

''साम्यवाद हो या पूँजीवाद
मैं दोनों पर थूकता हूँ,
और पूँछता हूँ
जिसके पैरों में तुम जूते नहीं दे सकते
उसके हाथ में तुम्हें बंदूक देने का क्या अधिकार है ?''[1]

Created with nitroPDF professional
download the free trial online at nitropdf.com/professional

2) प्रेरक व्यक्तित्व :–

सर्वेश्वर निराला तथा मुक्तिबोध की काव्य परंपराओं से प्रभावित थे। इसलिए साठोत्तर के बाद सर्वेश्वर अपने कवि व्यक्तित्व के कारण चर्चा का केंद्र बन चुके थे। सर्वेश्वर युवा पीढ़ी के सबसे प्रिय कवि थे। उनका व्यक्तित्व नये कवियों के साथ साथ अज्ञेय जैसे कवियों को भी प्रभावित करता रहा। अज्ञेय जी को सर्वेश्वर की काव्य प्रतिभा ने आरंभ से ही प्रभावित किया था। जिसका परिचय 'काठ की घंटियॉं' काव्य संग्रह को दी हुई भूमिका से स्पष्ट होता है।

3) निष्पक्षता :–

सर्वेश्वर का व्यक्तित्व एक सहज मिठास से भरा हुआ था। आम लोगों के प्रति उनके मन में अपार स्नेह होने के कारण वे उनके सुख दुख के साथ बिल्कुल जुड़ जाते थे। गुस्सा करना और कुछ समय बाद भूल जाना उनके स्वभाव की महत विशेषता थी। अपार स्नेह से भरे उनके मन में ईर्ष्या, द्वेश, मत्सर का मात्र लवलेश भी नहीं था। जिसका परिचय उनकी 'पुलियावाला आदमी' कहानी में होता है।

अपने विरोधियों के प्रति भी वे हमेशा अच्छे खयाल रखते थे। सर्वेश्वर एक नेक इन्सान, विनम्र सौजन्य और कर्म साधना से परिपूर्ण थे।

4) लोकमंगल की भावना :–

सर्वेश्वर जितने महान साहित्यकार थें उतने ही श्रेष्ठ समाज सेवक भी थे। मानवतावाद उनके साहित्य की मुख्य प्रेरणा थी। उनके साहित्य में चित्रित वेदना, पीड़ा पूरे समष्टि की अभिव्यक्ति है। दीन हीन, पीड़ित, गरीब, शोषित नारी के प्रति उनके मन में अपार करुणा थी। युवा वर्ग की सहायता के लिए वे हमेशा तत्पर रहते थे। अतः लोकमंगल की भावना उनके साहित्य में कुट कुटकर भरी हुई प्रतीत होती है।

5) स्पष्टवादिता :–

सर्वेश्वर विपत्ति, संघर्ष, निराशा को अपने जीवन के साथी मानते हैं। वे एक युगांतकारी कवि है। सर्वहारा वर्ग के प्रतिनिधि कवि होने के कारण समाज में विभिन्न क्षेत्रों में व्याप्त अन्याय, अत्याचार, शोषण, पाखंड़, भ्रष्टाचार, आड़म्बर आदि का खुलकर विरोध करते है। हर काम सोच समझकर करने के कारण वे न तो गलत काम करते थें और न ही दूसरों की गलतियों को नज़रअंदाज करते थे। वे किसी के दया के पात्र बनना नहीं चाहते थे।इसलिए वह कह उठते हैं –

Created with nitroPDF professional
download the free trial online at nitropdf.com/professional

''कुचल भी गया तो लज्जा किस बात की
रोकूंगा पहाड गिरता, शरण नहीं मॉगूँगा ।''[2]

इसके कारण ही स्वाभिमान, निर्भयता, स्पष्टवादिता उनके स्वभाव के खास पहलू हैं।

6) अलिप्तता :–

अलिप्तता सर्वेश्वर के स्वभाव की एक खास विशेषता थी। फिर भी वे जनसामान्य के कवि थे। उनके जीने का अंदाज निराला था।वे हमेशा भीड भाड तथा भौतिक आकर्षणों से दूर रहते थे। एकांत में जीवन व्यतीत करना उन्हें पसंद था। अलिप्तवादिता दृष्टिकोण के कारण वे किसी दल से बंदे नहीं।

7) ग्रामीण परिवेश के प्रति झुकाव :–

सर्वेश्वर का जन्म गॉव में हुआ था। बस्ती नामक अपने छोटे से गॉव में उनका बचपन बीता था। इसलिए बस्ती तथा वहॉ के ग्रामीण परिवेश के प्रति उनके मन में अत्यंत प्रेम था। गॉव का छल रहित जीवन उन्हें अधिक प्रिय था। गॉव के सहज सरल जीवन के संस्कार उन पर हुए थे। इसलिए उनकी रचनाओं में ग्रामीण परिवेश का यथार्थ चित्रण मिलता है। ग्रामीण संस्कारों की प्रबलता के कारण वे महानगरीय सभ्यता से दूर रहते थे इसलिए वे कभी भी शहर से समझौता नहीं कर पाए। उन्हें दिल्ली की सडके 'कुआनो नदी' जैसी दिखाई देती है। ग्रामीण संस्कारों से ही वह चरवाहों, हरवाहों, मजदूरों से तादात्म स्थापित कर जनसामान्य के अपने हुए।

8) प्रतिभा संपन्न साहित्यकार :–

सर्वेश्वर के पास एक सहज प्रतिभा दिखाई देती है। उन्होंने कल्पना का सहारा कभी नहीं लिया बल्कि यथार्थ को झकझोर दिया। यथार्थ को अत्यंत सहजता के साथ अभिव्यक्त करने का सफल प्रयास किया। अपने दायित्व के प्रति हमेशा सजग रहनेवाले कवि सर्वसामान्य जनता के लिए हमेशा लिखते रहे।

नृत्य, संगीत, चित्रकला, में भी उन्हें विशेष रुचि थी।

सर्वेश्वर की उपर्युक्त स्वभावगत विशेषताओं को देखने के बाद यह स्पष्ट होता है कि वे बहुगुणी, बहुआयामी प्रतिभा संपन्न साहित्यकार है।

Created with nitroPDF professional
download the free trial online at nitropdf.com/professional

आ) सर्वेश्वरदयाल सक्सेना का कृतित्व :–

सर्वेश्वर का हिंदी साहित्य जगत् में योगदान सराहनीय है। साहित्य की सभी विधाओं पर उनका समान अधिकार था। एक कवि तथा कहानीकार के रुप में उनका साहित्य जगत् में प्रवेश हुआ। अज्ञेय द्वारा संपादित 'तीसरे तारसप्तक' के वे प्रतिनिधि कवि थें। गद्य पद्य को साथ लेकर चलनेवाले सर्वेश्वर की कृतियों का परिचय लेना अनिवार्य होगा। उनके द्वारा लिखित कृतियॉ निम्न रुप में है –

1) कविता संग्रह :–

1) काठ की घंटियॉ (1957) 2) बॉस का पुल (1963)
3) एक सूनी नाव (1966) 4) गर्म हवाऍं (1969)
5) कुआनो नदी (1973) 6) जंगल का दर्द (1976)
7) खूँटियों पर टंगे लोग (1981) (साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त)
8) कोई मेरे साथ चले (1982)।

2) उपन्यास :–

1) सूने चौखटे 2) सोया हुआ जल 3) पागल कुत्तों का मसीहा।

3) कहानी :–

- **सामाजिक कहानियॉ :–**

1) मृत्युपाश 2) ऑधी की रात 3) प्रेम और मोह
4) खून और शराब 5) टूटे हुए पंख 6) बेबसी
7) प्रेम विवाह 8) वह चित्र 9) डूबता हुआ चॉद
10) मौत की छाया 11) कमला मर गई 12) मौत की ऑखें
13) क्षितिज के पार 14) रुप और ईश्वर 15) जिंदगी और मौत
16) पुलियावाला आदमी 17) कच्ची सड़क 18) लड़ाई
19) तीन लड़कियॉ एक मेंढ़क 20) प्रेमी 21) सफलता
22) लपटें 23) मीराबी 24) अंधेरे पर अंधेरा।

- **आर्थिक समस्या प्रधान कहानियॉ :–**

1) चोरी 2) बरसात अब भी आती है 3) सोने से पूर्व
4) छिलके के भीतर 5) मरी मछली का स्पर्श।

- **उपदेशपरक कहानियॉ :–**

1) बदला हुआ कोण।

Created with nitroPDF professional
download the free trial online at nitropdf.com/professional

4) नाटक :–

1) बकरी (1974) 2) लड़ाई 3) अब गरीबी हटाओ (1981)
4) हवालात 5) हिसाब किताब 6) होरी धूम मच्यो री
7) पीली पत्तियॉं।

5) बाल नाटक :–

1) कल बात आएगा 2) हाथी की पों 3) अनाप शनाप
4) भों भों खों खों 5) लाख की नाक।

6) बाल साहित्य :–

1) अपना दाना 2) सफेद गूड़ 3) जू चटट् पानी लाल
4) अब इसका क्या जवाब है ? 5) टूटा हुआ विश्वास।

7) यात्रा साहित्य :–

1) अपनी रुस यात्रा।

8) अनुवाद और संपादन :–

1) 'दिनमान' साप्ताहिक
2) 'पराग' पत्रिका
3) अनुवाद – नेपाली कविताएॅं।

Created with nitroPDF professional
download the free trial online at nitropdf.com/professional

तृतीय अध्याय

'बकरी' नाटक की समीक्षा

स्वातंत्र्योत्तर युग में हिंदी नाटक और रंगमंच के क्षेत्र में सर्वेश्वर का योगदान महत्वपूर्ण रहा है। उन्होंने हिंदी के नये नाटक की संभावनापूर्ण दिशा–लोकनाटय परंपरा को जीवित किया। और मोहन राकेश के द्वारा शुरु हुआ हिंदी नाटक रचनात्मक संघर्ष का दौर सर्वेश्वर ने आगे बढ़ाया। नाटय क्षेत्र में नये नये प्रयोग कर उन्होंने अपनी नाटय प्रतिभा का परिचय दिया। इस सिलसिले में उन्होंने नाटक, बालनाटक, रेड़िओ, नृत्य नाटक, एकांकी, तथा नुक्कड़ नाटक की रचना की। अतः सर्वेश्वर एक प्रयोगधर्मी नाटककार है। नाटक के क्षेत्र में उनका स्थान बड़ा महत्वपूर्ण है। उनके नाटक सामाजिक बुराइयों पर कड़ा प्रहार करते हैं।

यहॉ हम नाटक के तत्व –कथावस्तु, चरित्र चित्रण, कथोपकथन, देशकाल वातावरण, उद्देश्य, भाषाशैली, अभिनेयता और रंगमंच आदि के आधार पर 'बकरी' नाटक की समीक्षा करेंगे –

1) कथावस्तु :–

नाटक कथा साहित्य का एक अंग है। इसलिए इसमें कथानक भी होता है और उस कथानक को आगे बढ़ानेवाले पात्र भी।

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना हिंदी साहित्य जगत के बहुमुखी प्रतिभा के साहित्यकार है। उनका प्रथम प्रकाशित नाटक 'बकरी' (प्रकाशन सन 1974) के द्वारा ही उन्हें ख्याति मिली। सर्वेश्वर के नाटक भारतीय परिवेश की उपज है। और उनकी प्रयोगशीलता अभिव्यक्ति को शक्ति और विस्तार देती है।

'बकरी' नाटक में समकालीन राजनीति का पाखंड़ और अपराध वृत्ति के बढ़ने पर चिंता व्यक्त की गई है। यह नाटक जनतंत्र विरोधी चरित्रों पर, जन विरोधी नेताओं पर प्रहार करता है। इसलिए उसकी विषयवस्तु इस उद्देश्य को केंद्रीय बनाकर समकालीन स्थितियों और चरित्रों का मार्मिक गुंफन बनी हुई है।

'बकरी' नाटक की कथावस्तु दो अंकों में विभाजित है। प्रत्येक अंक में तीन तीन दृश्य है। समस्त घटनाएँ प्रायः एक स्थान पर घटित हुई है। यह समकालीन परिस्थितियों का नाटक है। गांधी और लोहिया के नाम पर राजनीति करनेवालों पर यह नाटक व्यंग्य करता है।'बकरी' बदलते हुए तेवर का सीदा साधा प्रभावशाली नाटक है। जिसमें समसामाईक सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक

Created with nitroPDF professional
download the free trial online at nitropdf.com/professional

और सारे दबाव को सहती हुई आम जनता का विद्रोह और एक नया निर्णय भी। आज़ादी के बाद अपने ही देश के नेताओं ने देश की आम जनता को लूटना शुरु किया। प्रस्तुत नाटक में देश के इसी भ्रष्ट, स्वार्थी, अवसरवादी राजनीतिक चरित्रों को उजागर किया गया है।

'बकरी' नाटक में गांधीजी के सिद्धांतों का दुरुपयोग बतलाया गया है। किस प्रकार आज भी गांधीजी की बकरी गावों में इस्तेमाल की जाती है। ग्रामीण जनता को गांधीवादी सिद्धांतों के जामे दिखाकर राजनीतिक नेता कुर्सी, पद, प्रतिष्ठा प्राप्त करते है। आज भी गांधीजी के नाम पर देश की गरीब जनता को ठगा जा रहा है। नाटककार सर्वेश्वर ने बकरी के माध्यम से आम जनता के इसी शोषण को बड़ी बखूबी के साथ पाठकों के सामने प्रस्तुत किया है। नाटक में बकरी गरीब जनता का प्रतीक है।

वर्तमान युग के राजनीतिक नेता देश की गरीब आम जनता की दयनीय स्थिति ओर उनकी मजबूरी का किस प्रकार दुरुपयोग करते रहते हैं यह इस नाटक की केंद्रीय कथावस्तु है। नाटक में तीन डाकू, एक सिपाही और उनके द्वारा गॉव की एक गरीब औरत विपती की बकरी हडप लेने का प्रसंग है। और उसी के चढ़ाव उतार द्वारा सारी विड़म्बना प्रस्तुत की गई है। एक ओर डाकू अर्थात भ्रष्ट व्यवस्था की योजनाएँ और उनके बीच गरीब औरत की बेबस पुकार तो दूसरी ओर चौपाल का दृश्य और ग्रामीणों की चिंता व्यथा नाटकीय व्यंग्य और करुणा को व्यंजित करती है।

नाटक में बकरी संस्थान, बकरी सेवा संघ, बकरी शांति प्रतिष्ठान, बकरी स्मारक निधि जैसे संस्थाओं के नाम से हमारे सारे व्यवस्थातंत्र, सरकारी संस्थाओं के आम आदमी के साथ व्यभिचार को खोलते है। राजनीति के क्षेत्र में चुनाव संबंधी दृष्टि, योजनाएँ, हथकंडे सीधे सामने आते हैं। डाकुओं का आगे चलकर नेता बनना, लम्बे लम्बे भाषण, बड़े बड़े झूठे वादें आज के भ्रष्ट राजनीतिक नेताओं के व्यक्तित्व और चरित्र के साथ उत्पन्न हुई विसंगतियों को उभारते है।नाटक के अंत में नाटककार ने एक युवक के द्वारा इस सारे भ्रष्टाचार व्यवस्था और विसंगति का पर्दाफाश और जनचेतना को पुनः जागृत करने की कोशिश दिखाई है। सर्वेश्वर की आस्था और विश्वास युवाशक्ति में साफ दिखाई देता है। युवक आम आदमी को उत्तेजीत करके नाटक को एक समाधान के संकेत पर पहुँचाता है। और पाठक के

Created with nitroPDF professional
download the free trial online at nitropdf.com/professional

मस्तिष्क पर प्रभाव ड़ालकर उसे सोचने के लिए मज़बूर कर देता है। यही इस नाटक की सफलता है।

2) चरित्र चित्रण :–

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना द्वारा लिखित 'बकरी' नाटक में ग्रामीण आदि मिलकर बारह पुरुष पात्र और तीन नारी पात्र है। इनमें दुर्जनसिंह, कर्मवीर, सत्यवीर, सिपाही, युवक और विपती उल्लेखनीय है।'बकरी' नाटक के पात्र यथार्थ के संवाहक है। शोषित और शोषक भ्रष्ट व्यवस्था और दुर्दशा पूर्ण लोकतंत्र, राजनीति का अपराध पूर्ण लुटेरापन और लापरवाही, नीडरता, शक्ति का गलत प्रयोग, आम जनता दमण और कमजोरियॉ आदि का प्रतिनिधित्व ये पात्र करते हैं। इसी रुप में उनके चरित्र है। संपूर्ण नाटकीय चरित्र सृष्टि का आधार पात्र होते हैं।

'बकरी' नाटक में पात्र योजना की दृष्टि से नेता, मंत्री एवं पुलिस आदि सत्ताधारी स्वार्थी, अवसरवादी, सुविधाभोगी पात्रों का चरित्र प्रस्तुत किया गया है। दुर्जनसिंह, कर्मवीर, सत्यवीर, सिपाही विकृत और भ्रष्ट स्वरुप उभारनेवाले पात्र है। इन पात्रों में सिपाही भ्रष्ट सत्ता का प्रतीक है। दुर्जनसिंह भ्रष्ट राजनीतिज्ञों का प्रतीक है जो गांधीवादी विचारधारा के पोषक रुप में अपने स्वार्थों की सिद्धि करते दिखाई देते है। दुर्जन अपने नाम के अनुसार दुर्जन ही है। कर्मवीर और सत्यवीर गांधीजी द्वारा प्रतिपादीत कर्म, सत्य आदि के आदर्शों के प्रतीक होकर भी व्यवहार के धरातल पर इन आदर्शों से जुड़कर नहीं जीते। बल्कि स्वार्थ के स्तर पर सत्ता से जुड़ जाते हैं। ये पात्र अपने नामों के अनुरुप सत्य, अहिंसा और लोकतंत्र आदि की बड़ी बड़ी बातें करके भी ठीक इसके विरोध में आचरण करते हैं। इन पात्रों के विरोध में जिन पीड़ित एवं शोषित पात्रों को चित्रित किया गया है उनमें प्रमुख है काका, काकी, चाचा, राम, ग्रामीण एक और दो।

चरित्र विकास की दृष्टि से नाटक में तीन नारी पात्र में से विपती ही महत्वपूर्ण है। भारतीय नारी समाज में रुढ़ियों, परंपराओं, मान्यताओं से शोषित रही है। उसे अपने व्यक्तित्व के विकास की स्वतंत्रता और अवसर आज भी प्राप्त नहीं हो रहें है। ग्रामीण नारी की स्थिति दुर्दशापूर्ण है क्योंकि यह नारी पुरुष समाज की दासता को सहती है और आर्थिक निर्धनता और परावलंबन उसे विवश तथा दयनीय बना देता है। जिस बकरी के सहारे विपती का उदर निर्वाह होता है वही बकरी छीन जाने पर

Created with nitroPDF professional
download the free trial online at nitropdf.com/professional

विपती के भीतर जो असहाय आक्रोश उभरता है वह शोषण के अत्यंत दयनीय और घृणास्पद पक्ष को उजागर करता है।

विपती के व्यक्तित्व एवं चरित्र चित्रण के माध्यम से अशिक्षित ग्रामीण भारतीय नारी की असहायता एवं दुर्दशापूर्ण स्थिति का चित्रण करते हुए तथाकथित भारतीय समाज के पुरुष वर्ग की निष्क्रियता, कठोरता तथा आक्रमक प्रवृत्ति पर तीखा प्रहार किया है।

इन पात्रों के अतिरिक्त इस नाटक में एक वर्ग उन पात्रों का भी है जो व्यवस्था के प्रति आक्रोश व्यक्त कर अपना जनवादी चेतना का स्वरुप उभारते हैं। 'युवक' पात्र इस जनवादी चेतना का सशक्त प्रतिनिधित्व करता है। शोषण के विरोध का प्रतीक के रुप में युवक का व्यक्तित्व इस नाटक में छाया हुआ है। कितनी भी प्रतिकूल परिस्थितियों में वह आवाज बुलंद करता है और ललकारता है। इसे व्यक्त करनेवाला युवक युवा पीढ़ी का प्रतीक है। युवक नाटककार की आशावादिता और नाटक का संदेश वाहक है। युवक नई पीढ़ी के उज्ज्वल भविष्य का, जागृकता, विवेकपुर्णता को अंकित करनेवाला चरित्र है। युवक नई चेतना और परिवर्तनकालीन पौरुष का प्रतीक है। युवक में जनशक्ति को संघटित करनेवाली आवाज, क्षमता और दृष्टि है। युवक नाटककार की चेतना और मार्गदर्शन को मुखरित करता है। नाटकीय व्यंग्य को उजागर करने की दृष्टि से यह पात्र अत्यंत महत्वपूर्ण है।

इस नाटक की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि नाटक में बकरी प्रत्यक्ष में रहकर भी एक समग्र चरित्र अर्जित कर लेती है। यह बकरी कुर्सी, धन और प्रतिष्ठा देती है। उसके नाम पर स्वार्थी नेता और मंत्री विभिन्न प्रकार की सेवाभावी संस्थाएँ निर्मित करते हैं। इस प्रकार यह बकरी सत्ताभोगी वर्ग के स्वार्थ साधन का आधार बनती है। अतः बकरी आम जनता का प्रतीक है।

3) कथोपकथन :–

नाटक के तत्वों के अंतर्गत कथोपकथन का स्थान महत्वपूर्ण है। जिसके माध्यम से कथाकार कथा को विकसित करते हुए पात्रों के आंतरिक एवं बाहय संघर्ष को, घटनाओं को दर्शकों के सामने उपस्थित करता है। नाटक के कथोपकथन इस दृष्टि से स्वाभाविक, संक्षिप्त, मार्मिक एवं पात्रानुकूल होने चाहिए।

सर्वेश्वर के नाटकीय संवादों में कथावस्तु को अग्रसर करने की अच्छी क्षमता है।

Created with nitroPDF professional
download the free trial online at nitropdf.com/professional

'बकरी' नाटक के पहले अंक में सिपाही ओर तीनों व्यक्तियों के संवाद है जिसमें गांधीजी की बकरी मिलने की बात बताई गयी है। यह बकरी उनके मत से कुर्सी, धन और प्रतिष्ठा देनेवाली है।

दूसरे दृश्य के अंतर्गत युवक तथा ग्रामीणों के बीच संवाद है। युवक ग्रामीणों को उनकी स्थितियों से उभरने की बात कहता है। युवक और सिपाही के संवादों द्वारा लोकतंत्र के प्रति आक्रोश व्यक्त हुआ है। नेताओं की जीत तथा ग्रामीणों की हार दर्शाते हुए युवक कहता है –''आप लोगों का अज्ञान जेहल ही है, अब ये जीत के और लूटेंगे, पहले बकरी का नाम लेकर लूटते थे अब आप का ही नाम लेकर लूटेंग।''[3]

इस प्रकार सर्वेश्वर के नाटक के कथोपकथन में कथावस्तु को अग्रसर करने की क्षमता है।

सर्वेश्वर के नाटक के संवाद पात्र की सामाजिक, बौद्धिक, राजनीतिक तथा अन्य प्रकार की सत्ताओं के स्तर के अनुकूल है।

'बकरी' में दुर्जनसिंह का कथन उसके चरित्र पर प्रकाश डालनेवाला है। जैसे – ''भाइयों यह हमारा सौभाग्य है कि हमें गांधीजी की बकरी मिल गयी। कुछ मिलना कुछ खोना भी होता है। हम जितना खोने को तैयार रहते हैं उससे पता चलता है कि हम कितना पाना चाहते है। इस बकरी ने हमेशा दिया है। आप को आज़ादी, एकता दी, प्रेम दिया। आज भी बहुत कुछ देने को मुतंजिर है पर आप लेना भूल गए है क्योंकि आप देना भूल गए है।''[4]

ग्रामीण अनपढ़ व्यक्ति द्वारा उनकी ही भाषा में कहे गए संवाद उनकी श्रद्धा और सीधेपन को स्पष्ट करते है।

निष्कर्षतः सर्वेश्वर के नाटकीय संवादों के संबंध में यही कहा जा सकता है कि उसमें कथावस्तु के विकास की क्षमता है। चरित्र को उजागर करने की योग्यता है। कहीं–कहीं गीत संवाद का प्रयोग कर कथा को गति देने का प्रयास किया गया है। पात्रानुकूल तथा छोटे–छोटे संवाद काफी मार्मिक एवं रोचक है।

4) देशकाल और वातावरण :–

उपन्यास की भॉति नाटकों में भी देशकाल तथा वातावरण का विचार किया जाता है। पात्रों के व्यक्तित्व में स्पष्टता तथा वास्तविकता लाने के लिए पात्रों के चारों ओर की परिस्थितियों, वातावरण तथा देशकालिक विधान

Created with nitroPDF professional
download the free trial online at nitropdf.com/professional

आवश्यकता पडती है। आठवें दशक के सर्वेश्वर के नाटक राजनीति के क्षेत्र में आए बिखराव, भ्रष्टाचार, सत्ता परिवर्तन आदि का चित्रण तो करते है। साथ ही इस सबके लिए शहर और गॉव दोनों को उत्तरदायी मानते हैं। इस लिए दोनों की सामाजिक स्थिति को उस रुप में स्वीकार भी करते है। उनकी दृष्टि से गॉव की पूरी जनता निराश हो चुकी है।

'बकरी' नाटक में नट जनता की मानसिकता को दर्शकों के माध्यम से कहता है–'' हो जड़भरत हमारे श्रोता, दर्द न छलके जितना खरोचूँ।''5

आगे चलकर वही नट गीत के माध्यम से देश की वर्तमान स्थिति को प्रकट करता है।

'बकरी' नाटक की शुरुआत ही नटी द्वारा मंगलाचरण से होती है। परंतु नट उसे राजनीतिक संदर्भ से जोडकर सारी स्थिति को स्पष्ट कर देता है–''पॉच देव सम पॉच दल लगी ढ़ोंग का रेस जिनके कारण हो गया देश आज परदेश''[6]

गीत गायन का प्रयोग भी नाटक में वातावरण को गहराने में सहायक सिद्ध होता है। स्थल और काल की इकाई बनी रहें इस लिए दो दृश्यों के बीच गीत गायन की योजना की गयी है।

5) भाषा :–

भावों को प्रकट करने के लिए भाषा उत्तम साधन है। वह विचारों की वाहिका है। नाटककार को भाषा प्रयोग में बहुत सावधन रहना पडता है। क्योंकि रंगमंच को ध्यान में रखकर भाषा का प्रयोग करना होता है। नाटक को लोकप्रिय एवं मंचानुकूल बनाने के लिए जनप्रचलित भाषा का प्रयोग करना चाहिए।

'बकरी' सामान्य जन का नाटक है जो जनसामान्य की भाषा में लिखा गया है। इसलिए केवल बकरी के प्रतीक को छोड़कर इस नाटक में सर्वत्र अभिधात्मकता के दर्शन होते हैं। गंभीर समस्या को सरल और सहज भाषा में प्रयुक्त करने में लेखक ने बड़े संतुलन से काम लिया है। पात्रों के अनुकूल भाषा का प्रयोग नाटककार की भाषा–विज्ञता की सही पहचान है। लोकभाषा का प्रयोग उनकी विशेषता है।जैसे–''काव सोचे सरकार, हमरे उपर तो दोउ तरफ से मार है दुई बड़कवन के बीच हम कहॉ जाए काव करें?''[7]

Created with nitroPDF professional
download the free trial online at nitropdf.com/professional

'बकरी' में युवक के मुख से सहज भाषा का उन्मेश हुआ है–''यही की वोट, चुनाव सब मजाक हो गया। सब झूठ चल रहा है, गरीबों की बकरी पकड़कर उनसे पहले पैसा दुहा। अब वोट दुह रहें हैं फिर पद और कुर्सी दुहेंगे।''[8]

सर्वेश्वर की भाषा में बिम्ब विधान की भी जबरदस्त क्षमता है। इस प्रकार हम देखते है कि पात्रानुकूल भाषा, सरल शब्द सर्वेश्वर की भाषा की विशेषता है।

6) उद्देश्य :–

सर्वेश्वर के सब नाटक उद्देश्य पूर्ण है। जिसमें आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक स्थिति पर करारा व्यंग्य है। 'बकरी' नाटक में वर्तमान राजनीतिक, सामाजिक व्यवस्था पर करारी चोट करना नाटककार का उद्देश्य रहा है।

7) अभिनेयता :–

सर्वेश्वर के नाटक अभिनय के लिए सर्वोत्तम है। इसमें घटनाओं की संक्षिप्तता, सुसंवाद की सहजता देखते ही बनती है। अभिनय की दृष्टि से नाटक की सफलता कईं बातों पर निर्भर रहती है। अंक तथा दृश्य योजना, पात्र संख्या, रंग सज्जा, संवाद आदि अनेक बातें महत्वपूर्ण है।

'बकरी' नाटक में नाटकों के अभिनय संबंधी उक्त दृष्टिकोण को पूरी तरह देखा जा सकता है। 'बकरी' नाटक की अंक योजना सरल है। प्रत्येक अंक में तीन–तीन दृश्य है। दृश्य के बाद नट गायन की योजना है। जिसके माध्यम से आसन्न स्थिति का विश्लेषण किया गया है। नाटक में कुल पात्र पंद्रह है जिसमें प्रमुख है – कर्मवीर, सत्यवीर, दुर्जनसिंह, विपती और युवक। गौण पात्र ग्रामीण जनता, भिश्ती, सिपाही, नट, नटी आदि है।

नाटक में सभी प्रसंगों को आसानी के साथ प्रस्तुत किया गया है। इस कारण नाटक का मंचन देश के कई भागों में सफलता के साथ हुआ है। नाटक दर्शक, पाठक और श्रोताओं के मस्तिष्क पर प्रभाव डालकर उन्हें वर्तमान राजनीतिक स्थिति पर सोचने के लिए मज़बूर कर देता है, यही इस नाटक की सफलता है।

Created with nitroPDF professional
download the free trial online at nitropdf.com/professional

चतुर्थ अध्याय

'बकरी' नाटक की प्रासंगिकता एवं व्यंग्यात्मकता

बहुमुखी प्रतिभा के धनी, हिंदी के प्रयोगशील नाटककार सर्वेश्वरदयाल सक्सेना का प्रसिद्ध और प्रथम प्रकाशित नाटक (सन 1974) 'बकरी' की प्रासंगिकता एवं व्यंग्यात्मकता का अध्ययन करने के पूर्व 'प्रासंगिकता' और 'व्यंग्यात्मकता' इन शब्दों के स्वरूप को जानना अनिवार्य है।

● प्रासंगिक शब्द का अर्थ और स्वरूप :–

आजकल कला और साहित्य के क्षेत्र में सर्वाधिक चर्चित विषय प्रासंगिकता का है। 'प्रासंगिकता' शब्द के मूल में 'प्रसंग' शब्द है। अतः प्रसंग संज्ञा मे 'इक' प्रत्यय लगने से 'प्रांसगिक' शब्द बना है। प्रासंगिक शब्द से 'ता' प्रत्यय लगकर 'प्रासंगिक' शब्द बना है। 'प्रासंगिक' शब्द से 'ता' प्रत्यय लगकर 'प्रासंगिकता' यह भाव वाचक संज्ञा बनी जिसका अर्थ है–प्रसंग, घटना तथा स्थिति के अनुरूप होना। अथवा दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि–वर्तमान युग में उपयुक्त।

'प्रासंगिकता' शब्द को परिभाषित करना मुश्किल है। फिर भी विभिन्न कोशों में 'प्रासंगिकता' के संदर्भ में इस प्रकार विवेचन प्राप्त होते हैं –

1) नालंदा विशाल शब्द सागर – में 'प्रासंगिक' शब्द के बारे में बताया गया है कि–''वह प्रसंग जिसमें कुछ विशेष कार्य या व्यय आदि करने की आवश्यकता आ पडे, अनुषंगिक, नैमित्तिक।''[9]

2) महाराष्ट्र (मराठी) शब्दकोश :– में 'प्रासंगिक' का कोशगत अर्थ है–प्रसंगानुरूप, समयोचित, विषयानुरूप, प्राप्तकाल आदि।[10]

3) Relevent–"Directly connected with the subject," having pracitcal value or importance" Dicitonary of contemporary English by–Longan.[11]

'प्रासंगिकता' शब्द को अंग्रजी में पर्यायी शब्द 'रिलेव्हंट' है। जिसका कोशगत अर्थ है–विषय से सीधा संबंध रखनेवाला, प्रत्यक्ष रूप में महत्वपूर्ण और मूल्यवान।

● 'व्यंग्यात्मकता' शब्द का अर्थ और स्वरूप :–

बीसवीं शताब्दी में हिंदी साहित्य में व्यंग्यात्मकता का व्यापक प्रसार एक महत्वपूर्ण घटना है। व्यंग्यात्मकता के मूल में 'व्यंग्य' शब्द है। 'व्यंग्य' शब्द संस्कृत भाषा का है। वि + अंग के योग से 'व्यंग्य' शब्द की निष्पत्ति मानी जात

है–संकेतित, गूढ़ या अप्रत्यक्ष इंगित द्वारा निर्देश।

Created with nitroPDF professional
download the free trial online at nitropdf.com/professional

'व्यंग्य' शब्द को अनेक विद्वानों ने परिभाषित करने का प्रयास किया है –

1) हरिशंकर परसाई–''व्यंग्य जीवन से साक्षात्कार करता है, जीवन की आलोचना करता है, विसंगतियों, मिथ्याचारों और पाखंडो का पदार्फाश करता है। अच्छा व्यंग्य सहानुभूति का सबसे उत्कृष्ट रूप होता है।''[12]

2) डॉ. बापूराव देसाई–''व्यंग्य एक दूरबीन है, जिसमें से विकृति, विसंगति, अत्याचार, अन्याय, भ्रष्टाचार को स्पष्टता से हम देख सकते है।''[13]

संक्षेप में व्यंग्य समाज की विसंगतियों पर बडी निर्ममता से प्रहार करता है।

अ) सामाजिक प्रासंगिकता एवं व्यंग्यात्मकता

किसी भी विषय पर तीव्र व्यंग्य के माध्यम से प्रहार करना सर्वेश्वरदयाल सक्सेना की विशेषता रही है। 'बकरी' नाटक में उन्होंने राजनीति को अपने व्यंग्य का निशाना बनाने के साथ–साथ सामाजिक विसंगति और मूल्यहीनता पर भी व्यंग्य किया है।

1) आम आदमी का शोषण :–

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना जनसामान्य के लेखक है। जनसामान्य के प्रति उनके मन में संवेदना और सहानुभूति है। वे जनसामान्य की गरीबी और पूँजीपतियों या व्यवस्था के द्वारा किया जानेवाला आम आदमी का शोषण सह नहीं पाते। अतः वे मानवतावादी लेखक है।

प्रस्तुत नाटक में आम आदमी के शोषण को चित्रित किया गया है। दुर्जनसिंह के आदेश पर सिपाही गाँव की एक गरीब, हरिजन औरत विपती की बकरी पकडकर ले आता है, जो उसकी एकमात्र जीविका थी। गरीब विपती धुर्त और चोर नेताओं का प्रतिकार नहीं कर सकती। विपती अपनी बकरी वापस मांगती है। वह दुर्जनसिंह के सामने गिड़गिडाती हैं। और कहती है–''पर हुजूर इ बकरी हमार है। हम गरीब आदमी है।''[14] वह सिपाही को भी अपनी बकरी माँगती है। सिपाही कहता है–''यह गांधीजी की बकरी है। तू इसे मामूली बकरी समझती है? यह फल खाती थी और तू इसे पीपल का पत्ता खिलाती है। ठीक खाना न मिलने पर यह कमजोर हो गयी है।[15]

इस प्रकार एक गरीब औरत को अपने बकरी के अधिकार से वंचित रखा जाता है। इस प्रकार बकरी छीनने के कार्य को भी बडी चालाखी से और आदर्शों का मुखौटा पहनाया जाता है।

Created with nitroPDF professional
download the free trial online at nitropdf.com/professional

दुर्जनसिंह गाँववालों को समझाते हुए कहता है कि–''यह गांधीजी की बकरी है, जो किसी देवी से कम नहीं है।''[16] सत्यवीर गाँववालो को दान देने के लिए प्रेरित करता है। दुर्जनसिंह बकरी को देवी बनाकर काफी मात्रा में पैसा इकठ्ठा करता है।

इस प्रकार वर्तमान युग में भी राजनीतिक नेता आदर्शों का मुखौटा पहन खुले आम देश की आम जनता का शोषण करते हुए दिखाई देते हैं। नाटककार ने इसी तथ्य को व्यंग्यात्मकता के माध्यम से दर्शाया है।

2) ग्रामीण और अशिक्षित जनता पर होनेवाले अन्याय और अत्याचार :–

''बकरी को क्या पता था
मशक बनके रहेगी,
पानी भरेंगे लोग
औ, वह कुछ न कहेगी।''[17]

नाटक में भिश्ती के इस गीत से दुर्जनसिंह, सत्यवीर, कर्मवीर नामक तीन व्यक्तियों को प्रेरणा मिलती है। उसके बाद सिपाही भी उनमें सम्मिलित होता है। सिपाही से एक बकरी मॅगवाई जाती है। स्पष्ट है कि बकरी जबरदस्ती से लाई जाती है। बकरी को गांधीजी की बकरी घोषित कर दिया जाता है। बकरी की मालकीयत गरीब, हरिजन, अशिक्षित, ग्रामीण स्त्री विपती को तथा उसकें ही समान उसका समर्थन करनेवाले गॉव के लोंगों को डरा–धमकाकर बकरी को दैवी शक्तियों से परिपूर्ण मानकर उसे 'सेवाश्रम' में रखा जाता है।

गाँव की अशिक्षित जनता को पाप–पुण्य का हवाला देकर 'बकरी स्मारक निधी' में चढावा चढाने के लिए प्रेरित किया जाता है। सत्यवीर कहता है–'' जिसकी आत्मा कमजोर हो, जिसे लालच, स्वार्थ ने घेर रखा हो, वह इस बकरी से क्या पाएगा? भगवान के पास खाली हाथ न जाने का मतलब यही है। जो फूल लेकर जाता है वह स्वर्ग लेकर लौटता है। इसलिए श्रद्धा देना जानती है। आप इस बकरी को जितना दें उतना कम है।''[18]

स्वार्थी सत्ता का दमनचक्र विपती को जेल भेज देता है। और सेवा संघों की स्थापना कर गाँववालो का शोषण प्रारंभ कर देता है। दुर्जनसिंह गाँववालों को पूरी तरह नीचोड देता है। गाँववालों के पास कुछ नही बचता। दुर्जनसिंह कहता है–''कर्मवीर ! अब इनके पास कुछ नही है। खुक्ख हैं सालें।''[19]

Created with nitroPDF professional
download the free trial online at nitropdf.com/professional

इस प्रकार नाटककार ने आज के स्वार्थी, भ्रष्ट तथा धुर्त राजनीतिक नेता देश की ग्रामीण, भोली–भाली जनता उनके अशिक्षित होने के फायदे लेते हुए अनेक प्रकार के अन्याय–अत्याचार कर अपनी स्वार्थ सिद्धि करते हुए दिखाई देते हैं।

3) समाज सुधार का आडम्बर :–

'बकरी' नाटक में वर्तमान राजनीतिक नेताओं के प्रतीक दुर्जनसिंह, कर्मवीर और सत्यवीर आदि के द्वारा समाजसुधार के आडम्बर को नाटककार ने व्यंग्यात्मक ढंग से प्रस्तुत किया है।

दुर्जनसिंह के आदेश पर सिपाही के द्वारा लायी गयी गॉव की गरीब, अशिक्षित औरत विपती की बकरी को गांधीजी की बकरी करार दिया जाता है और उसे 'सेवाश्रम' में रखने का निर्णय लिया जाता है। यही से नाटक में समाज सेवा और सुधार के आडम्बंर की शुरूआत होती है। दुर्जनसिंह कहता है–''बकरी वाद और विश्वशांति। मानवता को आगे बढाने का विचार है। सारा विश्व हमारा है।''[20]

नाटक में समाजसुधार के नामपर 'बकरी शांति प्रतिष्ठान,' 'बकरी संस्थान,' 'बकरी सेवा संघ,' 'बकरी मंडल' आदि संस्थाओं की स्थापना की जाती हैं। और इन्हीं संस्थाओं के माध्यम से जनता को लूटा जाता है।

इन सभी संस्थांओ के नाम प्रतीकात्मक है। जैसे–गांधी शांति प्रतिष्ठान, गांधी संस्थान, हरिजन सेवा संघ आदि। यह सब प्रतीक सीधे वर्तमान से टकराकर अपनी स्थिति के प्रति प्रतिक्रिया व्यक्त करते है। दुर्जनसिंह कहता है–''पवित्र विचार है। जनसेवा। चुनाव जिताना फिर मंत्री बनवाना सब बकरी करवाएगी।''[21]

इस प्रकार वर्तमान राजनीतिक नेता भी विभिन्न सामाजिक संस्थाएँ स्थापन कर समाजसेवा का दिखावा करते रहते हैं। जिसे नाटककार ने व्यंग्यात्मकता के माध्यम से बखूबी से चित्रित किया है।

4) 'बकरी' शीर्षक की प्रतीकात्मकता :–

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना द्वारा लिखित 'बकरी' नाटक का शीर्षक प्रतीकात्मक है। इस नाटक में बकरी को विविध अर्थो की अभिव्यंजना में प्रस्तुत किया गया है। बकरी कहीं पर गांधी के सिद्धांतों का प्रतीक है, कहीं पर उनके नाम पर चलनेवाले पाखंड और अनादर्श का तो कहीं पर जनता का प्रतीक है। आज गांधी के सिद्धांतों के आड में जनता को लूटकर नेता स्वार्थ और मतलब साध रहे है। गांधीजी के सिद्धांत और आदर्श अब व्यवहार आचरण में कहीं भी दिखाइ

Created with nitroPDF professional
download the free trial online at nitropdf.com/professional

केवल जनता के ठगने का एक उपाय बनकर रह गए हैं। दुर्जनसिंह कहता है–''इस बकरी ने हमेशा दिया है। आपको आजादी दी, एकता दी, प्रेम दिया। आज भी बहुत कुछ देने को मुंतजिर है।''[22] आगे सत्यवीर विपती से पूछता है–''इस बकरी ने तुझसे यह नहीं कहा कि पढ़–लिख, अपने पैरों पर खड़ा होना सीख। किसी का मुँह न देख। अपने बच्चों को भी इस लायक बना कि वे अपने हाथ से कमा सकें कम से कम में घर चला। फालतू खर्च मत कर। दूसरों की सेवा कर। सच बोल। त्याग कर। सबको अपना समझ.....।''[23] इस प्रकार सत्यवीर ने बकरी के माध्यम से गांधीजी की मान्यताओं को ही प्रकट किया है। आज गांधीजी के सिद्धांतो के द्वारा जनता को लूटा जा रहा है। आगे चलकर बकरी की हत्या कर दी जाती है जो गांधी के सिद्धांतों की हत्या है।

नाटक में कई स्थलों पर बकरी जनता के रूप में प्रयुक्त हुई है। युवक कहता है–''जानता हूँ। आप बकरी की पूजा इसलिए कराते हो ताकि सब बकरी बन जाएँ।''[24]

नाटक के अंत में गीत के माध्यम से भी कहा गया है –

''बकरी हमको बना दिया
बकरी की में–में ने
सब कुछ सहना सिखला दिया
बकरी की में–में ने''।[25]

' बकरी नाटक इन सारी योनजाओं का प्रतीक है। 'बकरी' प्रतीक की अवधारणा के पीछे लेखक की दृष्टि यथार्थवादी है। यह प्रतीक लेखक की जनचेतना का पर्व अभिव्यक्त करता है।

5) आम जनता का असंतोष और विद्रोह :–

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना ने अपने नाटक 'बकरी' में यथास्थान आम जनता का असंतोष और विद्रोह दिखाकर जागृत जनता और लोकतंत्र की सफलता को सूचित किया है।

नाटक में युवक और विपती जेल से छुट जाते हैं। विपती सिपाही को बकरी ले जाते हुए देखती है और गाँववालों को बताती हैं। परंतु गाँववालों का विपती की बातों पर विश्वास नहीं होता। वे बकरी को आश्रम में जाकर देखते हैं तो आश्रम खाली था। युवक गाँववालों को समझाते हुए कहता है–''अब

Created with nitroPDF professional
download the free trial online at nitropdf.com/professional

लोग? आप लोगों ने बकरी को देवी माना बाढ़ में सारा गाँव बह जाने दिया। पर आसरम को नहीं डूबने दिया। गाँव की जमीन खोद–खोदकर आसरम की जमीन उँची करते रहें। सूखा पडा, खुद भूखें रहें, घर का अनाज आसरम को दे आए। आसरम में दावतें उडती रहीं, खुद भूखे मरते रहें। फिर उन्हीं लुटेरों को कंधो पर बिठाकर देश की बागडोर थमा आए। अब भी कुछ समझे आप लोग।''[26] यही पर युवक का विद्रोह सचेत, जिम्मेदार आम जनता की आवाज को बुलंद करता है। उन्हें अपने संघर्ष पर विश्वास होता है। युवक के समझाने पर सभी बकरी को छुडाने के लिए शहर की और चल देते हैं। गाँववालों का असंतोष विद्रोह और जागृति कथा वस्तु में एक नया मोड है।

नाटककार की आशावादिता यहाँ लोकतंत्र के पुनःसक्षम और सही दिशा में होने के भविष्य के प्रति उम्मीदें जगाती हुई मानवता की और सक्रिय करती है।

नाटक के अंत मे युवक और विपती के साथ गाँव के लोग आते हैं। युवक कहता है–''बाँधों इन लुटेरों को। इन्कलाब जिंदाबाद।''[27] सभी को रस्सी से बाँध देते है। सब गाते है –

''तोंद अडियल पिचके पेटों पर चलाएँ गोलियाँ,
हर तरफ फिर न निकले क्रांतिकारी टोलियाँ
फिर बताओ किस तरह खामोश बैठा जाए है
अब तो खोले खून रह–रहकर जबां पर आए है–
बहुत हो चुका अब हमारी है बारी,
बदल के रहेंगे ये दुनिया तुम्हारी।''[28]

इस गीत में पीचके पेटोंवाली, भूखी संत्रस्त किंतु जागृत जनता का सक्रिय होकर क्रांतिकारक बनना दर्शाया है।

6) युवाशक्ति में आस्थाः–

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना द्वारा लिखित नाटक 'बकरी' में युवक एक विशिष्ठ पात्र है। शोषण के विरोध का प्रतीक के रूप में युवक का व्यक्तित्व इस नाटक में छाया हुआ है। कितनी भी प्रतिकूल स्थितियों में वह आवाज बुलंद करता है। और जुबान बनकर ललकारता है। इसे व्यक्त करनेवाला युवक युवापीढ़ी का प्रतीक है। यह गाँव का रहनेवाला परंतु उसने शहर में शिक्षा प्राप्त की है। वह पूरी तरह परिचित है। वह कहता है–''यही कि वोट, चुनाव

Created with nitroPDF professional
download the free trial online at nitropdf.com/professional

है। सब झूठ पर चल रहा है। गरीबों की बकरी पकड़कर उनसें पहले पैसा दुहा। अब वोट दुह रहे हैं, फिर पद और कुर्सी दुहेंगे।''[29]

युवक बकरी की साजिश जानता है। युवक को दो मोर्चों पर संघर्ष करना पडता है। एक तो जनता के अंधःविश्वास को तोडने के लिए और दूसरा कुटिल राजनीतिज्ञों को परास्त करने के लिए। पहली बार वह अपमानीत होता है तो दूसरी बार उसे जेल जाना पडता है। परंतु अंततः वह दोनों मोर्चों पर सफल हो जाता है। जेल से वापस आनेपर वह पुनःग्रामीणों को वस्तुस्थिति का परिचय देते हुए कहता है–''आप लोंगो का अज्ञान जहल ही है, अब ये जीत के और लूटेंगे, पहले बकरी का नाम लेकर लूटते थे अब आपका ही नाम लेकर लूटेंगे। बकरी मैया की कृपा से खेत नहीं लहलहाए, पानी जमीन फोडकर नहीं निकला।''[30]

युवक के समझाने पर ही गाँववालों में चेतना और जागृकता आती है और वे शोषण से मुक्त होते है। युवक में निर्भिकता, दृढता और समय की आवाज को समझने की शक्ति है। युवक नाटककार की आशावादिता, नई पीढ़ी के उज्ज्वल भविष्य, विविकपूर्ण और आकांक्षा जगानेवाला है।युवक नई चेतना और परिवर्तनकालीन पौरूष का प्रतीक है। युवक में जनशक्ति को संघटित करनेवाली आवाज, क्षमता और दृष्टि है। युवक नाटककार की चेतना, आस्था और मार्गदर्शन को मुखरित करता है। अतः परिवर्तन के लिए नाटककार की आस्था युवाशक्ति में ही है। देश के युवक ही चेतना, शक्ति और जागृति के परिचायक होते है।

आ) राजनीतिक प्रासंगिकता एवं व्यंग्यात्मकता :–

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना का लिखा हुआ नाटक 'बकरी' वर्तमान राजनीतिक जगत की चीर परिचित भयावह विसंगति पर तीखा व्यंग्य है। नाटक में स्वतंत्रत के बाद की राजनीतिक स्थिति का बडा प्रभावी चित्र अंकित किया है। आज राजनीती में भ्रष्टाचार पूरी तरह समा गया है। अब राजनीति देशसेवा के लिए न होकर स्वार्थ साधने के लिए ही है। नाटक में लिखा है –

''सेवा यहाँ पर स्वार्थ है
औ, स्वार्थ ही परमार्थ है
कोई किसी से है न कम
हैं देश के फूटे करम।''[31]

Created with nitroPDF professional
download the free trial online at nitropdf.com/professional

नाटककार ने किसी नेता का व्यक्तिगत रूप चित्रित नहीं किया लेकिन दुर्जनसिंह, कर्मवीर और सत्यवीर आदि के माध्यम से नेताओं की सामूहिक प्रवृत्ति को बडे ही व्यंग्यात्मक ढंग से उजागर किया है।

1) लोकतंत्र का अनुचित लाभ :–

हमारे विशाल भारत देश के समान यहाँ का लोकतंत्र भी बडा है। भारत जैसे बडे लोकतंत्र में पूरी जनता ही बेताज बादशाह है। सब को संविधान में समान हक्क, अधिकार और कर्तव्य दिए है। किंतु राजनीति ने अपराध, छल, दमन, आतंक आदि के द्वारा जनता को लोकतंत्र के बजाए गुंडातंत्र का ही अनुभव होता है। इस तथ्य को नाटककार ने व्यंग्यात्मकता से प्रस्तुत किया है। आज के राजनीतिक नेता जिनके हाथ में ही देश का भविष्य है वे ही यहाँ की जनता तथा लोकतंत्र की खिल्ली उडाते रहते है। दुर्जनसिंह विपती से कहता है–''परजा नहीं, लोकतंत्र में जनता जर्नादन कहो, जनता।''[32] सिपाही हमारे देश के लोकतंत्र का मजाक उडाते हुए युवक से कहता है–''तेरे हिसाब से यहाँ सब चूतिए बसते हैं ? दुनिया का सबसे बडा लोकतंत्र है अपना।''[33]

संक्षेप में जब तक लोकतंत्र की गतिविधियाँ सही अर्थ में जागृत जनसमाज के हाथों में नहीं होंगी तब तक लोकतंत्र असफल बनकर जुल्म ढालता रहेगा। और राजनीतिक नेता लोकतंत्र का फायदा लेकर अपना स्वार्थ साधते रहेंगे।

2) डाकुओं का नेता बनना :–

नाटक मे भिश्ती के गीत से दुर्जनसिंह, कर्मवीर और सत्यवीर को प्रेरणा मिलती है। ये तीनों ठग और उठायगीर है। पुलिस को भी अपने पक्ष मे मिलाए हुए है। ये तीनों नेतागिरी के माध्यम से देश की भोली भाली जनता को ठगना चाहते है। दुर्जनसिंह सिपाही से कहता है–''होश में बात करो दीवान जी। अब हम डाकू नहीं, शरीफ आदमी है।''[34]

कर्मवीर पहले डाकू था। अब चुनाव जीत गया है। कोई सज्जन और गरीब व्यक्ति तो चुनाव लड़ ही नहीं सकता।

आज यह सत्य है कि डाकू, भ्रष्ट और चरित्रहीन लोग ही राजनीति में छा गए है।

Created with nitroPDF professional
download the free trial online at nitropdf.com/professional

3) गांधीजी की नीतिज्ञों की विडम्बना :–

प्रस्तुत नाटक में बकरी गांधीजी की नीतियों का प्रतीक है। गांधीजी की नीतियाँ अहिंसक थी, आत्मपीडन उनका सिद्धांत था। स्वतंत्रता के पश्चात गांधीवाद को पूज्यनीय कहकर गांधी की प्रतिमाएँ स्थापित कर जितनी आसानी से उन्हें काँटा गया उतनी ही आसानी से बकरी भी काँपी जाती है। कुल मिलाकर विराट भारतीय जनता और उसके सशक्त नेतृत्व गांधीजी की उपेक्षा और अवमूल्यन कर बहुत ही आसानी से सब कुछ प्राप्त कर चुके है। गांधीजी के नाम पर ही जनता को ठगकर स्वार्थ साधे जाते है। दुर्जनसिंह कहेता है–''यह गांधीजी की बकरी है, जो कुर्सी, धन, प्रतिष्ठा देती है।''[35]

सिपाही जनता के ही रूप में निम्न जाति की स्त्री की बकरी पकडकर लाता है। क्योंकि गांधीजी हरिजनों का उद्धार चाहते थें और आज हरिजनों से ही कुर्सी, धन और प्रतिष्ठा मिलती है। हरिजनों के वोट ही निर्णायक बनते है।

नाटक में जनता के कल्याण के लिए–बकरी शांति प्रतिष्ठान, बकरी संस्थान, बकरी सेवा संघ, बकरी मंडल आदि संस्थाओं की स्थापना दिखाई है। जिसके माध्यम से नाटककार ने गांधी शांति प्रतिष्ठान, गांधी संस्थान, गांधी सेवा संघ, गांधी मंडल आदि सामाजिक संस्थाओं पर ही व्यंग्य किया है।

इस प्रकार नाटककार ने राजनीतिक नेताओं के द्वारा ही गांधीजी की नीतियों की विडम्बना होते हुए दिखाया है।

4) नेताओं की घृणित चालबाजी और चुनावी हथकंडे –

राजनीतिक नेता चुनाव के समय घृणित चालबाजी तथा अलग–अलग चुनावी हथकंडों की सहायता से जनता को बहकाकर, भाषणबाजी तथा बडे–बडे आश्वासन देकर चुनाव में जीत हाशिल करते है। तो कभी जनसेवा का दिखावा कर आम लोगों के प्रति आत्मीयता दिखाते हैं। इस सत्य को नाटककार सर्वेश्वरदयाल सक्सेना ने अपने नाटक 'बकरी' में व्यंग्यात्मकता के सहारे दर्शाया है। नाटक मे कर्मवीर की चुनाव लड़ने की इच्छा पर दुर्जनसिंह कहता है–''पवित्र विचार है। जनसेवा। चुनाव जितना, फिर मंत्री बनवाना।''[36]

कर्मवीर जनता के प्रति आत्मीयता दिखाकर हमदर्दी प्राप्त करते हुए कहता है–''हम जन्म के ठाकूर है। कर्म से ब्राह्मण और सेवक हरिजनों के है। हमें सबका वोट मिलना चाहिए।''[37]

Created with nitroPDF professional
download the free trial online at nitropdf.com/professional

चुनाव जीतने के लिए राजनीतिक नेता कभी–कभी जनता की श्रद्धात्मक भावनाओं को स्पर्श कर उनके कल्याण की कामना के प्रति दक्ष होने का दिखावा करते है, और जनता को अपने वश में करने में सफल होते है। सिपाही कहता है–''तो क्या हम झूठ बोलते है ? देवी ने खुद कहा है। सब अपना काम करो। कर्मवीर को चुनाव लड़ने का हुक्म दिया है। उसे चुनाव चिह्न के रूप में स्वयं अपना थन दिया है। जान लो तुम सब लोग कर्मवीर को वोट दोगे। उसी की मार्फत तुम्हारा कल्याण होगा। भाग्य खुलेंगे।''[38]

चुनाव मे खडे प्रत्याशी जनता से झूठे वायदे करते हैं। कर्मवीर कहता है–''चुने जाते ही हम तुम्हारे गाँव तक की सडक पक्की करा देंगे। सडक पर पानी नहीं भरेगा।''[39]

अतः चुनाव में झूठे, गुंडागर्दी भर गई है।

5) नेताओं के द्वारा भाई–भतीजा वाद को बढ़ावा :–

राजनीतिक नेता जनता को एक दूसरे के प्रति झूठ की सहायता से भडकाकर अपना स्वार्थ साधते हुए दिखाई देते हैं। उपर से एक दूसरे के प्रतिस्पर्धी दीखनेवाले राजनीतिक नेता अंदर से मिले होते है। राजनीतिक सफलता पाने के लिए यह नेता भाई–भतीजा वाद को बढावा देते रहतें हैं। इस दृष्टि से नाटक में ग्रामीण का कथन उल्लेखनीय है–''काव सोचें सरकार, हमारे उपर तो दोऊ तरफ से मार है। दुई बड़कवन के बीच हम कहाँ जाएँ, काव करें।''[40]

युवक के द्वारा चुनाव का विरोध करने पर उस पर तोड़फोड़ करने का झूठा आरोप लगाकर चुनाव की समाप्ति तक उसे जेल भेज दिया जाता है। इस सत्य को नाटक के निम्न प्रसंग द्वारा नाटककार ने दर्शाया है–

कर्मवीर – ''कितना पैसा दे रहा है वह हाथी वाला.....

युवक – न हम पैसे के गुलाम हैं, न ताकत से डरते हैं।

सिपाही – (एक हंटर मारकर) डरते तो बड़े बड़े हैं। कितने आदमी का गिरोह है तुम्हारा।

युवक – हमारा कोई गिरोह नहीं है।

कर्मवीर – झूठ बोलता है। यदि अकेला होता तो इतनी आवाज नहीं निकलती ।

युवक – जिसकी आवाज होती है उसकी अकेली होने पर

Created with nitroPDF professional
download the free trial online at nitropdf.com/professional

सिपाही – तुम्हारा इलाज आसान है। चुनाव खत्म हाने तक तुम जेल में रहोगे।''[41]

6) राजनीति में धन तथा आतंक का प्रभाव :–

राजनीति में राजनीतिक नेता धन तथा समय आनेपर आतंक का प्रयोग कर सफलता प्राप्त करने का प्रयास करते रहते हैं। इस तथ्य को नाटककार ने बखूबी से चित्रित किया है।

' 'बकरी' नाटक में दुर्जनसिंह बकरी को देवी बनाकर जनता से काफी मात्रा में पैसा इकठ्ठा करता हैं। उसके बाद वे कर्मवीर को चुनाव लड़ने के लिए प्रेरित करते है। दुर्जनसिंह अपने साथियों को आदेश देता है–''अब तुम लोग अपनी तैयारी करो और दीवानजी, गाँववालों को बता दो कि यदि कर्मवीर को वोट नहीं दिया तो..... खैर तुम समझदार हो।''[42]

कर्मवीर चुनाव लड़ता है। उसका चुनाव चिह्न बकरी का थन है। कर्मवीर के विरूद्ध जमीनदार का लड़का खड़ा है। गाँव की गरीब अशिक्षित जनता दो बड़े व्यक्तियों (कर्मवीर और जमीनदार) के बीच दबी है। ग्रामीण कहता है–''काव सोचे सरकार, हमारे ऊपर तो दोऊ तरह से मार है। दुई बड़कवन के बीच हम कहाँ जाएँ, काव करें।[43]

गरीब जनता को वोट देने के लिए डराया–धमकाया जाता है। सिपाही गाँववालों से कहता है–''जो कहा है वो याद रखो। वोट बकरी के थन को देना है। यदि अपना भला चाहते हो तो। हम कुछ सुनना नहीं चाहते। अपना फैसला हमने बता दिया। यदि यह नहीं हुआ तो खैर नहीं, पर हमें देवी (बकरी) प्यारी है। उसका हुक्म, हुक्म है। यदि वह कोई सजा कहेगीं तो वह भी हमें देनी होगी। जो बदमाशी करेगा उसे परलोक भी भेजा जा सकता है। उसकी कृपा सें हम आदमी को ठीक करना जानते है।..... हम सख्ती नहीं करना चाहते। अभी समय है।खूब सोच लो।जिसे न देना हो अभी साफ–साफ कह दो। धोखे में न रखो।''[44] जिस पर सब ग्रामीण चुप होकर सिर झुकाते है।

राजनीति में आतंक के साथ–साथ धन का भी खुले आम प्रयोग किया जा रहा है। अतः राजनीति धनवान तथा ताकतवार लोगों का ही क्षेत्र बनता चला जा रहा है। इस दृष्टि से युवक का कथन द्रष्टव्य है–''और सबसे बडा दिखाव भी। पैसा और ताकत जिसके पास है.....।''[45]

Created with nitroPDF professional
download the free trial online at nitropdf.com/professional

इस प्रकार राजनीति में जनता को भ्रम में रखने के लिए धन तथा आतंक का बखूबी उपयोग किया जाता है।

7) नेताओं की भोग लिप्साः–

नाटककार सर्वेश्वरदयाल सक्सेना जी ने अपने बहुचर्चित नाटक 'बकरी' में वर्तमान राजनीतिक नेताओं की भोग लिप्सा पर करारा व्यंग्य कसा है। नाटक में दुर्जनसिंह, कर्मवीर, सत्यवीर वर्तमान राजनीतिक नेताओं के प्रतीक है। जनता का प्रतिनिधित्व करनेवाले नेता जनता के ही पैसों पर विलास तथा ऐश–आराम का जीवन व्यतीत करते रहते हैं। यहाँ तक मौका मिलते ही एकाध विदेश यात्रा भी कर आते हैं। नाटक में ये तीनों गाँव की गरीब औरत विपती की बकरी को गांधीजी की बकरी घोषित कर लोगों से पैसा इकठ्ठा करते हैं। पैसा मिलते ही सत्यवीर कहता है–''मैं बकरीवाद पर भाषण देने विदेश जाता हूँ। बकरीवाद का प्रचार करूँगा।'' [46]

राजनीतिक नेताओं के साथ सिपाही भी मिल कर ऐश–आराम का जीवन व्यतीत करते हुए दिखाई देते है। इसलिए उँची कपडे पहने और आराम कुर्सी पर लेटे हुए दुर्जनसिंह को सिपाही एक जाम भर कर देते हुए गाता है–

''तमाम हिस्की तमाम रम
मिला करे प्रभु जनम जनम
हों संग कलेजी गरम गरम
औ, एक बाला नरम नरम।''[47]

यह गीत नेता और सिपाही की भोगलिप्सा का ही सूचक है। राजनीति में चुनाव जीतने के बाद लोगों को तथा अपने सहयोगियों को भोज देकर खुश करने की पद्धत–सी आ गई हैं। इस तथ्य को नाटककार ने बड़े ही प्रभावी ढंग से चित्रित किया है। नाटक में कर्मवीर भारी बहुमत सें चुनाव जीतता है। चुनाव जितन के उपलक्ष्य में एक बड़े भोज का आयोजन किया जाता है। भोज शहर में आयोजित होता है। कर्मवीर के सभी समर्थक उसमें आमंत्रित किए जाते है। भोज में गांधी की बकरी का गोस्त बनाने की योजना बनती है। सिपाही बकरी को शहर ले जाता है। भोज में शहर के बड़े–बड़े लोग शामिल होते हैं। कर्मवीर अपने अतिथियों से कहता हैं–''आप सब आए, यह हमारे लिए खुशी की बात है। यह धरती एक चरवाह है जिसकी घास जितनी ही रौंदो उतना ही पनपती हैं। हमें यकीन है कि हम आप सब मिलकर इस हरियाली को खत्म नहीं होने देंगे। अपने अपने

Created with nitroPDF professional
download the free trial online at nitropdf.com/professional

दीजिए। चरें, मस्त रहें। फिक्र की कोई बात नहीं.....सिर्फ दो ही नियम हैं, दाँत तेज़ और मजबूत हों, घास हरी और कोमल हो, फिर धरती चरागाह से ज्यादा कुछ नहीं हो पाएगी। शुरू कीजीए, इस जनता, इस चरागाह के नाम पर.....।'' [48]

8) सहकारी संस्थाओं के माध्यम से स्वार्थ सिद्धिः–

प्रस्तुत नाटक में 'बकरी शांति प्रतिष्ठान, बकरी संस्थान, बकरी सेवा संघ, बकरी मंडल जैसी संस्थाएँ वर्तमान सहकारी संस्थाओं के ही सूचक है। नाटक में 'बकरी स्मारक निधि' के माध्यम सें ग्रामीणों से पैसे और धन इकठ्ठा किए जाते है। जिसके ही बल पर सत्यवीर विदेश यात्रा का आयोजन करता है, तो कर्मवीर चुनाव लड़ने की तैयारी करता है। सत्यवीर को भी उँची कपडे पहने और आराम कुर्सी पर लेटे हुए दिखाया है। नाटक में ये तीनों गाते हैं–

''महल दुमहल बना दे बकरी मैया,
देश विदेश घुमा दे बकरी मैया,
बड़े बड़े पद ला दे बकरी मैया,
बैंक पर बैंक खुला दे बकरी मैया।'' [49]

इस प्रकार नाटककार ने सहकारी संस्थाओं के माध्यम से नेतागण अपना स्वार्थ साधते रहते है। इसी तथ्य को उद्घाटित किया है। सिपाही कहता है–''तिजोरी बढ़ती हो तो काम की चिंता नहीं।'' [50]

इस प्रकार स्वतंत्र भारत में देश की बागडोर राजनीतिक नेताओं के हाथ में आ गयी। राजनीतिक नेताओं ने जनता के विकास के लिए विभिन्न सहकारी संस्थाओं की स्थापना की, परंतु इन सहकारी संस्थाओं के माध्यम से जनता के कल्याण की अपेक्षा ये नेतागण अपना ही स्वार्थ साधते हुए दिखाई देते है।

इ) धार्मिक प्रासंगिकता एवं व्यंग्यात्मकताः–

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना जी ने अपने 'बकरी' नाटक में राजनीतिक परिवेश को अपने व्यंग्य का निशाना बनाया है। परंतु उन्होंने धार्मिक प्रासंगिकता को भी प्रभावशाली ढंग सें चित्रित किया है। क्योंकि राजनीतिक नेता अपनी सत्ता और स्वार्थ को बनाए रखने के लिए धार्मिकता को राजनीति में लाया जाता है।

1) धार्मिक श्रद्धा का अनुचित लाभ :–

राजनीतिक नेता जनता की धार्मिक श्रद्धा का अनुचित लाभ उठाकर अपना स्वार्थ और सत्ता बनाए रखना चाहते है। सत्ता पक्ष की सबसे ब

Created with nitroPDF professional
download the free trial online at nitropdf.com/professional

जनता की वही सबसे बड़ी समस्या और कमजोरी। इसलिए नाटक में ग्रामीणों के स्वर्ग–पुण्य, अंध:विश्वास के लाभ उठाकर बकरी को भगवान बनाकर लूटने की पूरी योजना की गई है। दुर्जनसिंह कहता है– ''आप लोग समझदार है। गांधीजी और उनकी बकरी की महिमा जानते है। आप जानते है कि देवता का मान कैसे करना चाहिए। गांधीजी देवता थे। उनकी बकरी किसी देवी से कम नहीं। यदि उसका मान नहीं हुआ तो क्या गाँववालों को शांति मिलेगी। इस बकरी में दैवी शक्ति है, जिसे पहचानने की जरूरत है।''[51] ग्रामीणों की पानी, महामारी तथा सूखे की समस्याओं पर दुर्जनसिंह कहता है–''इस बकरी के बताए रास्ते पर चलो, खेत लहलहाने लगेंगे, पानी जमीन फाड़कर निकलेगा।''[52] ग्रामीणों की धार्मिक श्रद्धा का अनुचित लाभ उठाते हुए दुर्जनसिंह कहता है–''अब आप यहाँ से खाली हाथ कोई न जाएँ। यहाँ से अब खाली हाथ कोई नहीं जाएगा। आपको जो मानत माँगना हो माँगें, आपकी मनोकामना पूरी होगी, जो कुछ आपके पास है इस पर निछावर कर दें, जो कुछ है इस पर चढ़ाकर जाएँ, सच्चे मन सें। आपके संकट टल जाएँगे।''[53]

इस प्रकार लोगों की धार्मिक भावनाओं का लाभ उठाकर राजनीतिक नेता अपना स्वार्थ साधते रहते हैं। इस तथ्य को और भी उजागर करने के लिए सिपाही का कथन भी महत्वपूर्ण है–''तो क्या हम झूठ बोलते हैं? देवी ने खुद कहा है। सब अपना काम करो। कर्मवीर को चुनाव लड़ने का हुक्म दिया है। उसे चुनाव चिह्न के रूप में स्वयं अपना थन दिया हैं। जान लो तुम सब लोग कर्मवीर को वोट दोगे। उसी की मार्फत तुम्हारा कल्याण होगा। भाग्य खुलेंगे।'' [54]

इसप्रकार नाटक में बीच–बीच में जनता को प्रभावित करने के लिए आत्मा, श्रद्धा, भाग्य जैसे शब्दों को उछाला गया है। नाटक में ग्रामीण अविवेकपूर्ण श्रद्धा के प्रतीक हैं।

2) अंध:विश्वास एवं धर्मांधता की प्रवृत्ति को बढ़ावा :–

राजनीतिक नेता देश की ग्रामीण, अशिक्षित, भोली–भाली, अज्ञानी जनता का फायदा उठाकर अपना अस्तित्व और आसन सुरक्षित रखने का प्रयास करते रहते हैं। इसलिए वे ग्रामीण जनों की अंध:विश्वास और धर्मांधता की प्रवृत्ति को बढ़ाते ही रहते है। इस तथ्य को नाटककार ने अपने नाटक 'बकरी' में अत्यंत प्रभावी ढंग से दर्शाया है।

Created with nitroPDF professional
download the free trial online at nitropdf.com/professional

नाटक में ग्रामीण अंधःविश्वास, श्रद्धा के प्रतीक है। धुर्त और चोर नेताओं द्वारा गाँव की गरीब, अशिक्षित स्त्री विपती की बकरी को पकड़कर लाया जाता है, और उसे गांधीजी की बकरी घोषित किया जाता है। विपती बकरी को छुड़ाने के लिए गाँववालों को बुलाती है। दुर्जनसिंह, सत्यवीर और कर्मवीर, गाँववालों को पहले समझाते है। विपती तथा उसका समर्थन करनेवालों को डरा–धमकाकर यह विश्वास दिलाया जाता है कि यह बकरी दैवी शक्तियों से पूर्ण है। इसलिए इसका 'सेवाश्रम'में रहना उचित है। दुर्जनसिंह कहता है–''आप लोग समझदार है। गांधीजी और उनकी बकरी की महिमा जानते है। आप जानते है कि देवता का मान कैसे करना चाहिए। गांधीजी देवता थे। उनकी बकरी किसी देवी से कम नहीं। आप बताइए देवी का मान होना चाहिए या नहीं।''[55]

सत्यवीर गाँववालों को दान देने के लिए प्रेरित करता है। गाँववाले बकरी को देवी मानकर पूजा करते हैं और चढ़ावा चढ़ाते हैं। सत्यवीर कहता है–''क्या मति मारी गई है तुम्हारी ? कुछ रूपया पैसा, सोना–चांदी चढ़ाओ।''[56] दुर्जनसिंह भी गाँववालों को धर्म के नाम पर आतंकित करता है। अतः गाँव की गरीब जनता दान देने में पीछे नहीं हटती।

ग्रामीणों को अंधःविश्वासू प्रवृत्ति का फायदा उठाकर कर्मवीर चुनाव लड़ता है और भारी बहुमत से जीत भी जाता है। युवक गाँववालों को समझाता है। पंरतु नेतागिरी करनेवालों को ये लोग भगवान से बड़े मानते हैं। अतः ग्रामीणों की अंधःविश्वास की जड़े इतनी गहरी है कि वे युवक को शत्रु मान लेते हैं। ग्रामीण कहता हैं – ''ए बचवा, इहॉ चोर डाकू के नहि न ? चोर डाकू के फैसला भगवान के हाथ होई। हमारे तोहारे हाथ नाहीं।''[57]

ई) प्रशासनिक प्रासंगिकता एवं व्यंग्यात्मकता :–

देश का प्रत्यक्ष कारोबार प्रशासन से चलता है। पुलिस तथा न्याय व्यवस्था प्रशासन के महतवपूर्ण अंग है। उनका निर्माण जनता की रक्षा तथा सत्यता परखने के लिए हुआ है। परंतु वर्तमान काल की हमारे देश की पुलिस और न्याय व्यवस्था राजनीतिक नेताओं के दबाव में अथवा उनसे हाथ मिलाकर काम करती हुई दिखाई देती है। जिसके कारण जनता को न्याय की अपेक्षा अन्याय का ही सामना करना पड़ता है। प्रशासन के लोग राजनीतिक नेताओं के साथ मिलकर भ्रष्ट प्रवृत्ति को बढ़ाकर अपनी उन्नति साधते हुए दिखाई देते है।

Created with nitroPDF professional
download the free trial online at nitropdf.com/professional

'बकरी' नाटक में नाटककार सर्वेश्वरदयाल सक्सेना जी ने इस तथ्य को व्यंग्य का सहारा लेकर प्रस्तुत किया है।

1) भ्रष्ट पुलिस प्रशासन :–

पुलिस प्रशासन का एक महत्वपूर्ण अंग है। देश की जनता की सुरक्षितता की जिम्मेदारी उन पर होती है। परंतु पुलिस राजनीतिक नेता तथा गुंडों से मिले होने के कारण वे जनता के रक्षक नहीं भक्षक बन जाते हैं। देश की पुलिस यंत्रणा गुंडों के साथ मिली हुई है। इस सत्य को नाटककार ने बखूसे से अपने नाटक 'बकरी' में दिखाया है। दुर्जनसिंह के अब हम डाकू नहीं शरीफ आदमी बन गए हैं। इस वक्तव्य पर सिपाही कहता है –''शरीफ आदमी ! (रोने लगता है) हाय अब मेरा क्या होगा ?[58]

अब पुलिस की नेताओं के साथ भी साँठ–गाँठ हो गई है। जिससे पुलिस गरीब जनता को सताती है, और उनका शोषण करती है। सिपाही का डंडा अब केवल दीन–दुखियों को प्रताड़ना देने के लिए ही है। सिपाही गाता है–

''डंडा उँचा रहे हमारा
दीन दुःखी का ताड़नहारा
डंडा उँचा रहे हमारा।''[59]

पुलिस चुनाव में नेताओं का साथ देकर अपना स्वार्थ और उन्नति साधने में जुटी हैं। इसलिए नाटक में दूसरे अंक के पहले दृश्य में सिपाही को डी. आई. जी. की पोषाख में आराम सें टाँगे फैलाए दिखाया है। वह दुर्जनसिंह को कहता हैं– ''सर, अब मैं डी. आई. जी. हूँ।''[60]

इस प्रकार प्रशासन के सिपाही से लेकर बड़े अधिकारी तक सब नेताओं से मिले है। इसलिए कर्मवीर की चुनावी जीत पर आयोजित भोज के संदर्भ में दुर्जनसिंह कहता है –''सभी बड़े अधिकारी, मंत्री आएँगे। आखिर सब कर्मवीर के साथी होंगे।[61]

2) भ्रष्ट न्याय व्यवस्था :–

पुलिस यंत्रणा के समान न्याय व्यवस्था भी प्रशासन का महत्वपूर्ण अंग हैं। परंतु आज विडम्बना यह है कि कानून भ्रष्टाचारियों का साथ देता है। न्याय की रक्षा करने के स्थान पर अन्याय को बढ़ावा और सत्य का दमन यही कानून की दबरदस्ती के नतीजे रहे हैं। जिसे नाटककार ने 'बकरी' नाटक

Created with nitroPDF professional
download the free trial online at nitropdf.com/professional

सिपाही के द्वारा विपती की एकमात्र जीविका–बकरी को पकड़ लाने पर विपती पर ही सार्वजनिक संपत्ति हड़पने का झूठा अभियोग लगाया जाता है। कर्मवीर – (जज की विग लगाकर) ''सिपाही, सार्वजनिक संपत्ति हड़पने के आरोप में इस औरत को दफा एक्स, क्यू जीरो के अधीन दो साल सक्त कैद की सजा दी जाती है। साथ ही पाँच सौ रूपया जुर्माना। न देने पर छः महीने की कैद बामशक्कत।''[62] अतः विपती ढ़ाई वर्ष के लिए जेल में डाल दी जाती है।

युवक चुनाव का विरोध करता है। बकरी के षड़यंत्र का भंडाफोड़ देता है। तब सिपाही युवक को पीटता है। और तोड़फोड़ करने का झूठा अभियोग लगाकर चुनाव की समाप्ति तक के लिए उसे जेल भेज दिया जाता है। कर्मवीर युवक से कहता है–''तोड़फोड़ की सजा जानते हो ? इसकी सजा के लिए मुकदम्मा भी जरूरी नहीं, जानता है।''[63]

इस प्रकार हमारे देश की न्याय व्यवस्था भी नेताओं के दबाव में आकर न्यायदान का कार्य कर रही है। जिससे निष्पाप लोगों की बली चढ़ाई जाती है।

उ) आर्थिक प्रासंगिकता एवं व्यंग्यात्मकता :–

स्वतंत्र भारत देश की बुनियादी समस्याओं में 'गरीबी' एक भयानक समस्या है। आज भी देश में आर्थिक विषमता की दरार बढ़ती हुई ही दिखाई देती है। देश के इस सत्य को नाटककार ने अपने नाटक 'बकरी' में व्यंग्य के सहारे दर्शाया है।

1) गरीबी का विदारक चित्रण :–

नाटक में देश की अशिक्षित, ग्रामीण जनता की गरीबी का विदारक चित्रण अंकित किया है। विपती अपनी बकरी माँगने के लिए सिपाही के पास आती है। और कहती है–''हुजुर ई बकरी हमार है। हम गरीब आदमी है, आप किसी और बकरी को गांधीजी की बकरी बनाय लें। हमारे बच्चे एही के दूध से रूखी रोटी खात है। एही के सहारे हम जीय रहे है। हम गरीब का सहारा न छीनो।''[64] बकरी न मिलने पर विपती गाँववालों को बुलाकर लाती है। तब ग्रामीणों के प्रवेश वर्णन में नाटककार ने लिखा है–औरत के साथ चार छः ग्रामवासियों का प्रवेश। सभी अनपढ़, नंगे हैं। यह प्रवेश वर्णन देश के ग्रामीणों की गरीबी का ही सूचक है। इसप्रकार देश की अधिकांश जनता गरीबी की मार से आहत है। पर राजनीतिक नेता उसका समाधान करते हैं। राजनीतिक नेताओं का प्रतीक सत्यवीर कह

Created with nitroPDF professional
download the free trial online at nitropdf.com/professional

मन की होती है, गरीबी केवल विचारों की होती है, दृष्टि की होती है। जानती है औरत, गांधीजी केवल छः पैसे में गुजर करते थें।''[65] परंतु यहाँ जिन छः पैसों में जीवन यापन का उदाहरण जनता के सामने रखा है, उसके पालन का बंधन राजनेताओं पर नहीं है।

2) गरीबी के कारण विद्रोह की चेतना :–

लोकतंत्र की सफलता देश की सचेत जनता के हाथ में है। जनता पर होनेवाले अन्याय–अत्याचार, गरीबी, अशिक्षा आदि को जब वाणी मिलती है तो जनता आपने आप समझ जाती है कि उसकी स्थिति की जिम्मेदार वह स्वयं ही है। जिससे जनता में विद्रोह की भावना जाग्रत होती है।

नाटक में युवक ग्रामीणों को समझाकर जागृत कर विद्रोह के लिए प्रेरित करता है। युवक ग्रामीणों को कहता है–''बाबा, हम समझ नहीं पा रहे है, इ सब ठग है, आप सबको सीधे आदमी जान ठगी करते है, देश में ई ठगी बहुत चल रही है। सूखा, महामारी, अन्न–जल की तबाही सब इन्हीं लोगों की वजह से हैं। आप लोगों का अज्ञान जेहल ही है, अब ये जीत के लूटेंगे, पहले बकरी का नाम लेकर लूटते थे अब आपका ही नाम लेकर लूटेंगे। अब आसरम की उन्हें क्या जरूरत है, जो पाना था पा गए। अब भी कुछ समझे आप लोग? आप लोगों ने बकरी को देवी माना। बाढ़ में सारा गाँव बह जाने दिया पर आसरम को नहीं डूबने दिया। गाँव की जमीन खोद–खोदकर आसरम की जमीन उँची करते रहे। सूखा पड़ा, खुद भूखे रहें, घर का अनाज आसरम को दे आए। आसरम में दावतें उड़ती रहीं, खुद भूखों मरते रहे। फिर उन्हीं लुटेरों को कंधों पर बिठाकर देश की बागडोर थमा आए। अब भी कुछ समझे आप लोग?''[66] इस पर सब ग्रामीण सिर झुकाए खडे रहते है। विपती और युवक के शहर की ओर चलने पर सब ग्रामीण बिना कुछ कहे पीछे चल देते है। यहाँ नाटककार ने गाँव की गरीब, अशिक्षित जनता के जागृत होने का संकेत दिया है। सब शहर जाकर नेताओं के प्रतीक दुर्जनसिंह, कर्मवीर, सत्यवीर और उनके समर्थक आदि को रस्सी से बाँध देते हैं। और गाते हैं –

'' तोंद अड़ियल पिचके पेटों पर चलाए गोलियाँ,
हर तरफ फिर न निकलें क्रांतिकारी टोलियाँ
फिर बताओं किस तरह खामोश बैठा जाए है
अब तो खोले खून रह–रहकर जबा ए

Created with nitroPDF professional
download the free trial online at nitropdf.com/professional

बहुत हो चुका अब हमारी है बारी,

बदल के रहेंगे ये दुनिया तुम्हारी।''[67]

Created with nitroPDF professional
download the free trial online at nitropdf.com/professional

पंचम अध्याय

उपसंहार

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना हिंदी साहित्य जगत के बहुमुखी प्रतिभा के साहित्यकार है। हिंदी के प्रयोगशील नाटककारों में सक्सेना जी का महतवपूर्ण स्थान है। उनका प्रथम प्रकाशित नाटक 'बकरी ' के द्वारा ही उन्हें ख्याति मिली। सर्वेश्वर के नाटक भारतीय परिवेश की उपज है। और उनकी प्रयोगशीलता अभिव्यक्ति को शक्ति और विस्तार देती है।

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना लिखित 'बकरी' यह नाटक विकसित रंगमंच की पूरी क्षमता को ध्यान में रखकर न तैयार करके खुले मंच के लिए तैयार किया है। जिससें कि यह किसी भी समय कम–से–कम खर्च में ज्यादा–से–ज्यादा लोगों के सामने खेला जा सकें।

सर्वेश्वर के नाटक आठवें दशक की परिस्थितियों पर हुई उनकी प्रतिक्रिया की अभिव्यक्ति है। सर्वेश्वर जनसामान्य के लेखक थें। जनसामान्य के प्रति उनके मन में संवेदना और सहानुभूति थी। वे जनसामान्य की गरीबी और पूँजीपतियों या व्यवस्था के द्वारा किया जानेवाला शोषण सह नहीं सकते। सर्वेश्वर किसी राजनीतिक दल के साथ प्रतिबद्ध नहीं हुए। वे मानवतावादी लेखक है।

सर्वेश्वर के सभी नाटक युगीन चेतना से संबद्ध है। उनके नाटकों में राजनीतिक भ्रष्टाचार और गरीबी की पीड़ा को उजागर किया गया है। वे सीधे अपने युग से जुड़े है। 'बकरी' नाटक से संबंधित आढवाँ दशक राजनीतिक दृष्टि से उथल–पुथल का दशक रहा है। कालाबाजार, तस्करी, घूसखोरी, अव्यवस्था, अराजकता, भ्रष्टाचार के गहराते संकटों में आपातकाल की घोषणा हुई। जिससे भय और अत्याचार का युग आरंभ हुआ। राजनीतिक अस्थिरता, मानवीय मूल्यों का विघटन करनेवाला यह परिवेश 'बकरी' नाटक की प्रेरक भूमि बन गया। अपने युग के यथार्थ को सर्वेश्वरदयाल सक्सेना जी ने 'बकरी' नाटक में बकरी के प्रतीक द्वारा स्थापित किया। नाटक की यह प्रतीकात्मकता युगीन संदर्भो को गहराई प्रदान करती है।

'बकरी' नाटक में समकालीन राजनीति का पाखंड और अपराध वृत्ति के बढ़ने पर चिंता व्यक्त की गयी है। यह नाटक जनतंत्र विरोधी चरित्रों पर प्रहार करता हैं। इसलिए उसकी विषयवस्तु इस उद्देश्य को केंद्रीय

Created with nitroPDF professional
download the free trial online at nitropdf.com/professional

स्थितियों और चरित्रों का मार्मिक गुंफन बनी हुई है। बकरी के माध्यम से नाटककार ने आज की सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, प्रशासनिक, आर्थिक स्थिति का बड़ा प्रभावी चित्र अंकित किया है। एक निरूपद्रवी बकरी का राजनीति के द्वारा देवी बनाना, हलाल होना और अंत में नेताओं की पूर्ति का साधन हो जाना, राजनीति की चरम पुष्टता और अन्याय का सूचक है।

नाटक के अंत में गरीब, अशिक्षित, संत्रस्त किंतु जागृत जनता का सक्रिय होकर क्रांतिकारी बनना दर्शाया है। धूर्त, पाखंडी, चरम् शोषक, भ्रष्टाचारी राजनीति उसके अपराधपूर्ण कारना में, उससे प्रभावित जुल्मी, अन्यायी कानून और न्याय व्यवस्था आदर्श और समाजसुधार के नाम पर चलनेवाला दमनतंत्र आदि का का बेझिझक चित्रण इस नाटक में हुआ है। नाटक अत्यंत मर्मग्राही और विस्तृत चेतना प्रभावी है। जब तक लोकतंत्र की गतिविधियाँ सही अर्थ में जाग्रत जन समाज के हाथों में नहीं होगी तब तक लोकतंत्र असफल बनकर जुल्म ढालता रहेगा, यह स्पष्ट करता हुआ 'बकरी' नाटक का विद्रोह और जनसंघर्ष से आगे बढ़कर सशक्त क्रांति की माँग करता है।

'बकरी' नाटक के द्वारा सर्वेश्वरदयाल सक्सेनाजी ने गांधी, जनता, और समकालीन नेता इन तीनों की मानसिकता को स्पष्ट किया है। इस प्रयोजन से नाटक के पात्र और चरित्र प्रतिनिधित्व धारण करते है। 'बकरी' नाटक के दुर्जनसिंह, कर्मवीर और सत्यवीर आज के भ्रष्ट नेताओं के प्रतीक है। इसी प्रकार युवक, विपती, ग्रामीण आदि पात्र देश के गरीब वर्ग का, शोषितों का प्रतिनिधित्व करते है। पूरा युग उनके नाटक में साकार हो गया है।

'बकरी' नाटक ग्रामीण परिवेश से संबंधित होने के साथ आधुनिक परिवेश के चित्रण और उससे उत्पन्न चेतना द्वारा आधुनिक बोध से संपन्न नाटक है। आधुनिक बोध के कारण इस नाटक में शुरू से अंत तक सर्वत्र प्रतीकात्मकता का निर्वाह हुआ है। तथा अंत में क्रांति की चेतना देता हैं।

Created with nitroPDF professional
download the free trial online at nitropdf.com/professional

संदर्भ सूची

1 एक सूनी नाव – सर्वेश्वरदयाल सक्सेना, – पृष्ठ 53
2 गर्म हवाएँ – सर्वेश्वरदयाल सक्सेना, पृष्ठ – 52
3 बकरी – सर्वेश्वरदयाल सक्सेना, – पृष्ठ – 49
4.....वही..... पृष्ठ – 22
5 .....वही..... पृष्ठ – 12
6.....वही..... पृष्ठ – 11
7.....वही..... पृष्ठ – 42
8.....वही..... पृष्ठ – 43
9 नालंदा विशाल शब्दसागर,, – पृष्ठ – 916
10 महाराष्ट्र (मराठी) शब्द कोश – भाग 5, – पृष्ठ – 2146
11 Dicitonary of contemporary English by – Longan – Page – 878
12 हिंदी व्यंग्य विधाशास्त्र और इतिहास – डॉ. बापूराव देसाई – पृष्ठ –27
13 हिंदी व्यंग्य विधाशास्त्र और इतिहास – डॉ. बापूराव देसाई – पृष्ठ –27
14 बकरी – सर्वेश्वरदयाल सक्सेना, – पृष्ठ – 23
15 .....वही..... पृष्ठ – 21
16 .....वही..... पृष्ठ – 26
17 .....वही..... पृष्ठ – 15
18 .....वही..... पृष्ठ – 22
19 .....वही..... पृष्ठ – 37
20 .....वही..... पृष्ठ – 37
21 .....वही..... पृष्ठ – 37
22 .....वही..... पृष्ठ – 22
23 .....वही..... पृष्ठ – 23
24 .....वही..... पृष्ठ – 44
25 .....वही..... पृष्ठ – 55
26 .....वही..... पृष्ठ – 51
27 .....वही..... पृष्ठ – 56
28 .....वही..... पृष्ठ – 57
29 .....वही..... पृष्ठ – 43
30 .....वही..... पृष्ठ – 49
31 .....वही..... पृष्ठ – 34
32 .....वही..... पृष्ठ – 23
33 .....वही..... पृष्ठ – 43
34 .....वही..... पृष्ठ – 16
35 .....वही..... पृष्ठ – 19
36 .....वही..... पृष्ठ – 37
37 .....वही..... पृष्ठ – 42
38 .....वही..... पृष्ठ – 41
39 .....वही..... पृष्ठ – 43
40 .....वही..... पृष्ठ – 42
41 .....वही..... पृष्ठ – 44
42 .....वही..... पृष्ठ – 38
43 .....वही..... पृष्ठ – 42
44 .....वही..... पृष्ठ – 42
45.....वही..... पृष्ठ – 43
46 .....वही..... पृष्ठ – 37
47 .....वही..... पृष्ठ – 44
48 .....वही..... पृष्ठ – 54

Created with nitroPDF professional
download the free trial online at nitropdf.com/professional

49 .....वही..... पृष्ठ – 37
50 .....वही..... पृष्ठ – 38
51 .....वही..... पृष्ठ – 26
52 .....वही..... पृष्ठ – 27
53 .....वही..... पृष्ठ – 27
54 .....वही..... पृष्ठ – 41
55 .....वही..... पृष्ठ – 26
56 .....वही..... पृष्ठ – 28
57 .....वही..... पृष्ठ – 31
58 .....वही..... पृष्ठ – 16
59 .....वही..... पृष्ठ – 21
60 .....वही..... पृष्ठ – 46
61 .....वही..... पृष्ठ – 46
62 .....वही..... पृष्ठ – 27
63 .....वही..... पृष्ठ – 44
64 .....वही..... पृष्ठ – 23
65 .....वही..... पृष्ठ – 24
66 .....वही..... पृष्ठ – 51
67 .....वही..... पृष्ठ – 57

- आधुनिक हिंदी नाटक – डॉ. लक्ष्मीराय
- समकालीन हिंदी कथा साहित्य – डॉ. प्रेम कुमार
- हिंदी नाटकों की शिल्पविधि – गिरिजा सिंह

Created with nitroPDF professional
download the free trial online at nitropdf.com/professional